अथ नासिकेतोपाख्यानं भाषाटीकासहितं प्रारभ्यते ।
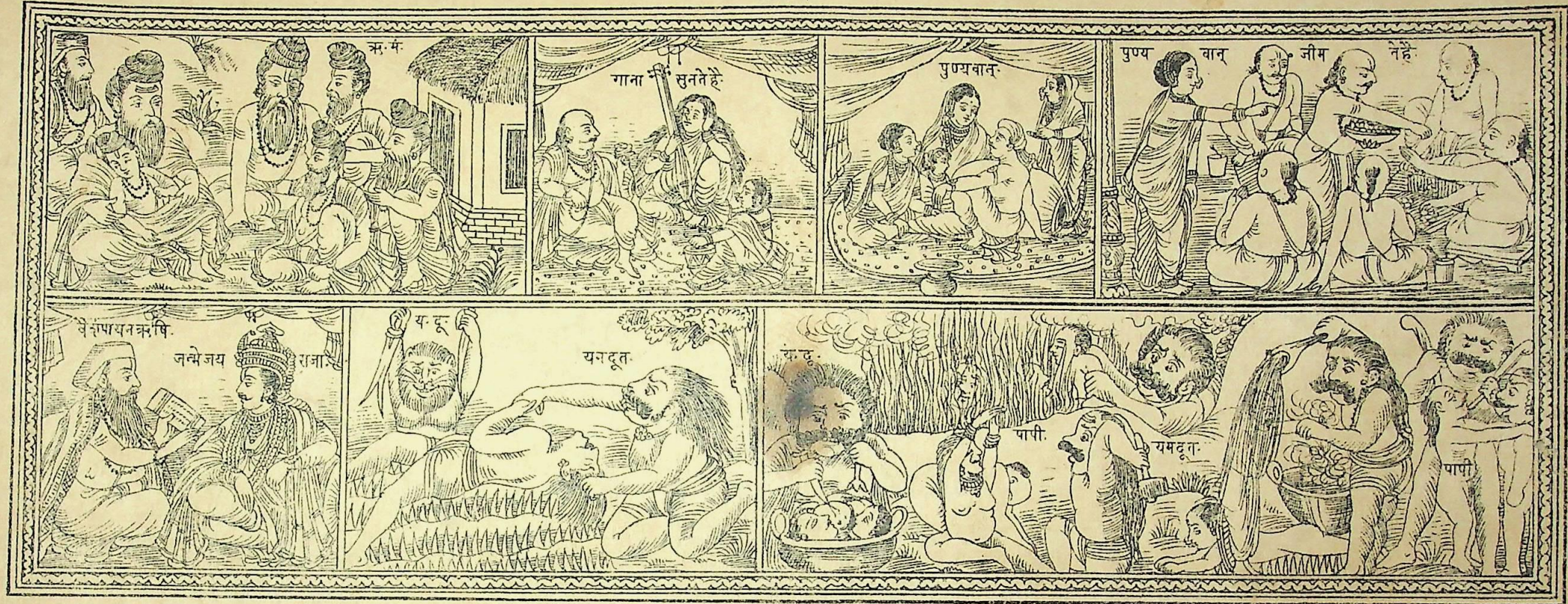
नासिकेत.

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ अथ नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकाप्रारंभः ॥

श्रीकेशवं केशवसंज्ञकोविन्नत्वा रमालालितपादपद्मम् ॥
परांकुशाख्यं पितरञ्च नत्वा श्रीनासिकेतस्य करोमि भाषाम् ॥ १ ॥

दोहा—नमस्कार नारायणहिं, करि नरोत्तमहि नौमि ॥ वंदि गिराव्यासहि रचत, भाषाटीका सौमि ॥ १ ॥ सूतजी बोले कि, गंगाके

श्रीगणेशाय नमः ॥ ॥ अथ नासिकेतोपाख्यानप्रारम्भः ॥ ॥ नारायणं नमस्कृत्यनरंचैवनरोत्तमम् ॥ देवींसरस्वतींचैवततोजयमुदीरयेत् ॥ १ ॥ ॥ सूत उवाच ॥ ॥ गङ्गातीरेसुखासीनःकृतस्नानोह्यलंकृतः ॥ दानंदत्वाचविधिवद्द्विजेभ्योजनमेजयः ॥२॥ जनमेजय उवाच ॥ ॥ पृच्छामितेमहाप्राज्ञसर्वशास्त्रविशारद ॥ कथयस्वकथांदिव्यांसर्वपापप्रणाशिनीम् ॥ यां श्रुत्वासर्पपापेभ्योमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ ३ ॥

तीरमें सुखसों बैठे भये और स्नान करिकै अलंकार जे गहने आदि हैं तिन करिकै शोभित राजा जनमेजय विधिपूर्वक ब्राह्मणनको दानदैकै वैशंपायनसों बोलत भये ॥ २ ॥ जनमेजय बोले ॥ आप बडे पंडित और सब शास्त्रनमें प्रवीण हो याते और सब पापनकी नाश करनहारी ऐसी दिव्य कथाको कहो जाको सुनिकै मनुष्य सब पापनते छूटि जाय यामें संदेह नहींहै ॥ ३ ॥

तब वैशंपायनजी बोले ॥ कि हे राजानमें सिंह ! आप सुंदर पुराणनकी कथाको सुनिये और जे तपमें बैठे भये और मुनीश्वर हैं वे हू सुनैं ॥ ४ ॥ हे राजा ! पहले समयमें बडे धर्मात्मा ब्रह्माके पुत्र उद्दालक या नामसों विख्यात बडे तपस्वी होत भये ॥ ५ ॥ वे वेद और वेदके अंग जे शिक्षा कल्प व्याकरण आदिहैं तिनके तत्त्वके जाननहारे और स्मृति जे मनु याज्ञवल्क्य गौतम आदि हैं तिनके सिद्धांतके पार जानहारे होत भये ॥ ६ ॥ उनको आश्रम बहुतही मनोहर और ऋषि तथा मुनीश्वरन सों

वैशंपायन उवाच ॥ ॥ श्रूयतांराजशार्दूलकथांपौराणिकींशुभाम् ॥ शृण्वन्तुऋषयःसर्वेयेचान्येतपसि स्थिताः ॥ ४ ॥ कश्चिदासीत्पुराराजन्नृषिःपरमधार्मिकः ॥ उद्दालकेतिविख्यातोब्रह्मपुत्रस्तुतापसः ॥ ५ ॥ वेद वेदांगतत्त्वज्ञःस्मृतिसिद्धांतपारगः ॥ ६ ॥ तस्याश्रमपदंरम्यमृषिभिर्मुनिभिः श्रितं ॥ नानाद्रुमलताकीर्णंनानापुष्पोपशोभितम् ॥ ७ ॥ हंसैःकारंडवैश्चैवचक्रवाकैश्चशोभितम् ॥ सेव्यमानंखगानीकैर्महिषैर्गवयैर्मृगैः ॥ ८ ॥ आगतश्चाश्रमेतस्यपिप्पलादो महामुनिः ॥ तमागतंतथादृष्ट्वाआतिथेयंचकारसः ॥ ९ ॥

शोभित हो रह्योहै और नानाप्रकारके वृक्षनसों तथा लतानसों भरो भयो नानाप्रकारके फूलनसों शोभितहै ॥ ७ ॥ हंस कारंडव नाम पक्षी और चकवा चकवीनसों शोभितहै और पक्षीनके समूहसों तथा भैंसों लीलगायों और मृगानके समूहसों शोभित है ॥ ८ ॥ वा उद्दालक मुनिके आश्रममें पिप्पलाद नाम मुनीश्वर आवत भये उन्हें आये देखि उद्दालक उनको अभ्यागत सत्कार

करत भये ॥ ९ ॥ और बोले कि हे मुनिश्रेष्ठ ! आपको आगमन अच्छो भयो आसनपर बैठिये और हे महाराज तपोधन जा वार्त्ताके लिये आपको आवनो भयोहै ताहि कहिये ॥ १० ॥ उद्दालकके या वचनको सुनिकै पिप्पलाद मुनि उनसों बोलत भये ॥ ११ ॥ हे मुनिनमें श्रेष्ठ ! आप मेरो प्यारो वचन सुनिये. हे विद्वाननमें श्रेष्ठ ! तुमने वडो तीव्र तप कियोहै ॥ १२ ॥ परंतु वनिता जो स्त्रीहै

स्वागतंमुनिशार्दूलविष्टरेचोपविश्यताम् ॥ यदर्थमिहचायातस्तद्वदस्वतपोधन ॥ १० ॥ उद्दालकवचः श्रुत्वापिप्पलादस्तमब्रवीत् ॥ ११ ॥ श्रूयतांमुनिशार्दूलममवाक्यंचसूनृतम् ॥ अहोतपोमहत्तीव्रंत्वयात प्तंविदांवर ॥ १२ ॥ परंवनितयाहीनंसंयमेनउपस्थितः ॥ तवपार्श्वेसपत्नीकाऋषयस्तपसिस्थिताः ॥ स पुत्राःसन्तिभोब्रह्मन्पुत्रहीनस्त्वमेवच ॥ १३ ॥ अपुत्रस्यगृहंशून्यंपरलोकेगतिर्नहि ॥ तस्मात्सर्वप्रय त्नेनपुत्रमुत्पादयेन्नरः ॥ १४ ॥ उद्दालक उवाच ॥ ॥ षडशीतिसहस्राणिव्यतीतावत्सराश्चवै ॥ पिप्प लादमुनिश्रेष्ठब्रह्मचर्ययुतस्यच ॥ १५ ॥

ता करि हीन जे आपहैं तिनके समीप संयमसों आयेहैं और तुम्हारे समीप स्त्रीसमेत ऋषि तपमें स्थितहैं और वे सबरे पुत्रन समेतहैं हे ब्रह्मन् ! तुमही पुत्रहीनहौ ॥ १३ ॥ जाके पुत्र नहीं है वाको घर सूनोहै और परलोकहूमें वाकी गति नहीं होयहै ताते सबरे जतननसों मनुष्यको पुत्र उत्पन्न करनो चाहिये ॥ १४ ॥ उद्दालक बोले ॥ कि हे मुनिनमें श्रेष्ठ पिप्पलाद ! मोको ब्रह्मचर्यमें

रहकर तप करते भये छयासी हजार वर्ष बीति चुकेहैं ॥ १५ ॥ पिप्पलाद बोले । कि कायासों मनसों और वचनसों नारीनको त्यागहीहै परंतु ऋतु धर्मके विना अपनी स्त्रीमें जो नहीं गमन करनोहे वही ब्रह्मचर्य कहो जायहै ॥ १६ ॥ और ऋतुकालमें गमन करनो वंशके चलनेको कारण है जो याप्रकार गमन करैहै उनको दोष नहीं है यह पहले स्वायंभुवने कहीहै ॥ १७ ॥ उनसों

पिप्पलाद उवाच ॥ ॥ कायेनमनसावाचानारीणांपरिवर्जनम् ॥ ऋतुसेवांविनास्वस्याब्रह्मचर्यं तदुच्यते ॥ १६ ॥ ऋतुकालाभिगमनंवंशस्यैवतुकारणम् ॥ नतेषांदोषमस्तीतिपुरास्वायंभुवोऽब्रवीत् ॥ १७ ॥ एवमुक्त्वाततस्तंवैपिप्पलादोमहामुनिः ॥ उद्दालकंनमस्कृत्यसमुनिःस्वाश्रमंययौ ॥ १८ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ उद्दालकस्तुतच्छ्रुत्वादुःखसंतप्तमानसः ॥ क्वयामिकन्यकांकस्माल्लभिष्यामीति चिंतयन् ॥१९॥ पुनरुक्तंतुयास्यामिप्रजापतिनिवेशनम् ॥ सप्रदास्यातिमेभार्यांश्रेष्ठांवंशधरांशुभाम् ॥२०॥

याप्रकार कहिकै महामुनि पिप्पलाद उद्दालकको नमस्कार करि अपने आश्रमको जात भये ॥ १८ ॥ वैशंपायन बोले ॥ कि उद्दालक उस वचनको सुनिकै दुःखीहो अपने मनमें विचार करत भये कि कहाँ जाऊं और कासों कन्या पाऊँ ऐसे चिंता करत भये ॥ १९ ॥ फिरि कहत भये कि, प्रजापतिके स्थानको जातोहौं वे मोको श्रेष्ठ वंश चलावनहारी सुंदर

स्त्री देंगे ॥ २० ॥ और जहाँ प्रजापति देव स्थित है वहां जात भये और ता पीछे प्रजापतिको देखि नमस्कार करिकै उनके आगे स्थित होत भये ॥ २१ ॥ ता पीछे आये भये उन पुरुषनमें श्रेष्ठ उद्दालक मुनिसो पर मेष्ठी यह वचन बोलत भये कि, हे मुनिनमें श्रेष्ठ तपोनिधि उद्दालक! आपको आवनो अच्छो भयो ॥ २२ ॥

प्रस्थितःसचतत्रैवयत्रदेवःप्रजापतिः ॥ प्रजापतिस्ततोदृष्ट्वाप्रणम्यचाग्रतःस्थितः ॥ २१ ॥ तमागतं नरव्याघ्रंपरमेष्ठ्यब्रवीदिदम् ॥ स्वागतंमुनिशार्दूलउद्दालकतपोनिधे ॥ २२ ॥ यदर्थमिहचायातः कारणंतद्वदस्व नः ॥ प्रजापतिवचःश्रुत्वाऽब्रवीदुद्दालकोमुनिः ॥ २३ ॥ संतानार्थमिहायातोभार्यार्थंच प्रजापते ॥ यथास्यान्ममपुत्रश्चकुलीनाचशुभावधूः ॥ तथात्वंकुरुमेतातस्त्रष्टासिजगतःप्रभो ॥ २४ ॥ ॥ ब्रह्मोवाच ॥ प्रथमंतवपुत्रोवैपश्चाद्भार्याभविष्यति ॥ भविष्यतिचतेपुत्रोयोसौवंशविवर्द्धनः ॥ २५ ॥

और जाके लिये आप यहाँ आयेहौ वा कारणको मोसों कहौ तब प्रजापतिके या वचनको सुनिकै उद्दालक मुनि बोलत भये ॥ २३ ॥ कि, हे प्रजापति! संतानके लिये और भार्याके लिये मैं यहाँ आयोहौं जैसे मेरे पुत्र होय और कुलीन सुन्दर वधू मिलै हे प्रजापति महाराज! आप ऐसो उपाय करिये हे प्रभु! आप जगत्के उत्पन्न करनेहारे हौ ॥ २४ ॥ ब्रह्मा बोले। कि, पहले

तुम्हारे पुत्र होयगो ता पीछे भार्या होयगी और तुम्हारे वंशको बढावनहारो पुत्र होयगो ॥ २५ ॥ और सबरे लक्षणसों पूर्ण रघुवंशकी स्त्री मिलैगी वा करिक तुम्हारो वंश बढैगो यह मेरो वचन अन्यथा नहीं होयगो ॥२६॥ हे उद्दालक महामुनि! आप अपने आश्रमको पधारिये॥२७॥इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः॥१॥

सर्वलक्षणसंपूर्णारघुवंशस्यसुंदरी ॥ तयावर्द्धिष्यतेगोत्रंममवाक्यंनचान्यथा ॥ २६ ॥ गच्छत्वमाश्रमेविप्रउद्दालकमहामुने ॥२७॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेउद्दालकचिंतानामप्रथमोऽध्यायः ॥१॥ वैशंपायन उवाच ॥ उद्दालकस्ततोवाक्यंश्रुत्वाप्यंतरधीयत ॥ स्वाश्रमेचागतस्तत्रमनस्येतदचिंतयत् ॥ १ ॥ भार्यायाःप्रथमंपुत्रः श्रुतोदृष्टोनकस्यचित् ॥ ब्रह्मणातुमृषैवोक्तंपारिहास्यंकृतंमम ॥२॥ कथंममभवेत्पुत्रःकथंभार्यांलभाम्यहम् ॥ इतिचिंतयतस्तस्यमन्मथाकुलितस्यच ॥ ३ ॥

वैशंपायन बोले ॥ या वचनको सुनिकै ता पीछे उद्दालक मुनि अंतर्धान होजात भये और अपने आश्रममें आयके मनमें यह चिंतवन करत भये ॥ १ ॥ कि मैने भार्यासों पहले काहूके पुत्र न देख्यो है न सुन्योहै ब्रह्माने तो झूठीही कही मेरी हांसी की न्हीं है ॥ २ ॥ मेरे कैसे पुत्र होयगो और मैं कैसे भार्या पाऊंगो या प्रकार चिंता करते भये वे उद्दालकमुनि कामसों व्याकुल

होत भये ॥ ३ ॥ और वा समय उनको वीर्य स्खलित होत भयो ता पीछे मुनीश्वर वा वीर्यको वडे यत्नसों कमलपत्रके दोनेमें राखत भये ॥ ४ ॥ और वा दोनाको कुशानसों लपेटि गंगामें डारि देत भये वहां गंगाके तटमें रघुराजाकी वडी पुरी ही ॥ ५ ॥ वा पुरीमें चित्रकारन करि जामें नाना प्रकारके चित्र बनाये गयेहैं और सुमेरु पर्वतके शिखरके समान वा मनोहर सपेद महलमें

उद्दालकस्यचमुनेरेतःप्रस्खलितंतदा ॥ तद्वीर्यंपद्मपुटकेक्षिप्तंयत्नेनवैततः ॥ ४ ॥ तंकुशैर्वेष्टयित्वातुगंगामध्येविनिक्षिपत् ॥ तत्रगंगातटेराज्ञोरघोश्चमहतीपुरी ॥ ५ ॥ तस्यांमहतिप्रासादेचित्रितेशिल्पभिःसिते ॥ मेरुशृंगनिभेरम्येवसतिस्मरघोःसुता ॥ ६ ॥ त्रिषुलोकेषुविख्यातानाम्नाचंद्रवतीशुभा ॥ कन्यादशसहस्रेणसेवितासानृपात्मजा ॥ ७ ॥ उर्वशीमेनकाद्याश्चस्वर्वेश्यारंभिकादयः ॥ तस्याःसर्वाशुभास्ताश्चकलांनार्हंतिषोडशीम् ॥८॥ सखीपरिवृतासाचसर्वालंकारभूषिता ॥ नित्यंसास्नातिगंगायां तदाभोज्यंभुनक्तिसा ॥ ९ ॥

रघुकी पुत्री वास करैही ॥ ६ ॥ और वह रघुकी पुत्री चंद्रवती या उत्तम नामसों तीनों लोकनमें विख्यातही और दश हजार कन्या वा राजाकी पुत्रीकी सेवा करैही ॥७॥ और उर्वशी मेनका रंभा आदि सब अप्सरा वाकी सोलहीं कलाहूके समान नहींहीं॥८॥ सब अलंकारनसों शोभित वह कन्या सब सखीनसमेत नित्य गंगाको स्नान करैही ता पीछे फिरि भोजन करैही ॥ ९ ॥

ध्वजा और चमरहैं हाथमें जिनके ऐसी सखीन करि सेवा करी गई वह राजकन्या गंगाजीके नहायवेकों आवत भई ॥ १० ॥ और बहुतसी कन्यान समेत जलके मध्यमें धसत भई वहां दूरि गंगाजलके ऊपर वह देखती भई ॥ ११ ॥ कि कुशानसों लपेट्यो भयो सन्मुख आवतो एक दोना देख्यो और वह सखीनको आज्ञा देत भई कि तुम या दोनाको ले आ

गंगायांस्नातुमायातासखीभिःपरिवारिता ॥ ध्वजचामरहस्ताभिःसेवितारघुकन्यका ॥ १० ॥ प्रविष्टाजलमध्येतुबहुकन्यासमन्विता ॥ पश्यंतीतत्रकन्यासादूरंगंगोदकोपरि ॥ ११ ॥ पुटकंवेष्टितंदर्भैस्तरं तमभिगामिनम् ॥ आज्ञापयत्कन्यकांसाह्यानयेतिसखींप्रति ॥ १२ ॥ तदाज्ञयातयानीतंपुटकंदर्भवेष्टितम् ॥ गृहीत्वाराजकन्यासाघ्रात्वासौगंधिकंचतत् ॥ १३ ॥ क्षिप्तंप्रवाहेगंगायाश्चंद्रवत्यातयापुनः ॥ आघ्रातमात्रं तद्वीर्यंप्रविष्टंनाभिमंडले ॥ १४ ॥ स्नात्वाचप्रस्थितासातुसखीभिःपरिवारिता ॥ प्रासादेस्वेच्छयापूर्वंक्रीडतिस्मयथासुखम् ॥ १५ ॥

ओ ॥ १२ ॥ वाकी आज्ञाते वे सखी वा कुशानसों लपेटे भये दोनाको लावत भई तब वह राजकन्या वा दोनाको ले वाकी गंधको सूंघत भई ॥ १३ ॥ फिरि चंद्रवतीने वा दोनाको गंगाकी धारमें डारि दीन्हो और वह वीर्य सूंघनेहीसों वाके नाभिमंडलमें प्रविष्ट होजात भयो ॥ १४ ॥ और वह कन्या सखीन समेत स्नान करिकै वहांते चलत भई और अपने महलमें आयकै

इच्छापूर्वक सुखसों क्रीडा करन लगी ॥ १५ ॥ और विना जानों भयो गर्भ वा चंद्रवतीके भयो सो सुनौ पहले महीनामें वा
को रुधिर और वह वीर्य मिलि जात भयो ॥ १६ ॥ और दूसरे महीनेमें वाके रोमनकी पांति दीखन लगी और तीसरे
महीनेकी आवनेपै वाको शरीर बढन लगो ॥ १७ ॥ और ता पीछे चौथे मासमें वाके स्तननके मुख श्याम रंगके होजातभये

अज्ञातगर्भस्तस्यासीच्चंद्रवत्यास्तथाशृणु ॥ मासेतुप्रथमेतस्यामिलितं शुक्रशोणितम् ॥ १६ ॥ रोमरा
जितरंगश्चद्वितीयेमासिचाभवत् ॥ तृतीयेमासिसंप्राप्तेशरीरंविपुलायते ॥ १७ ॥ चतुर्थेचततोमासेस्त
नंकृष्णमुखंभवेत् ॥ पंचमेमासिसंप्राप्तेउदरंव्यक्तिमेतिच ॥ १८ ॥ संभूतमुदरंदीर्घमासेषष्ठेचसप्तमे ॥
दृष्ट्वाचाप्युंदरंकन्याभ्रष्टतेजास्तदाभवत् ॥ १९ ॥ उद्विग्नमानसाजातापतिताशोकसागरे ॥ रुदतीं
तांततोभीताःपप्रच्छुःकन्याकाःकिल ॥ २० ॥ किमर्थंरोदिषिदेविकथयस्वयथातथम् ॥ सखीनांवचनं
श्रुत्वारोदमानाब्रवीदिदम् ॥ २१ ॥

और पाँचमें महीनेके आवनेपै पेट दिखाई देन लगो ॥ १८ ॥ छठे तथा सातमें महीनेमें पेटको बढोभयो देख्यो तब वह
कन्या तेजसों रहित होजात भई ॥ १९ ॥ उद्विग्न कहिये घबराहटमें है मन जाको ऐसी होजात भई और शोकसमुद्रमें परिगई
तब रोती भई वा चन्द्रवतीसों वे कन्या भयभीतहो पूँछती भई ॥ २० ॥ हे देवी तू काहेको रोवै है या रोयवेके कारणको तू यथार्थ

कहिदे तव सखीनके या वचनको सुनिकै रोवती भई यह वचन बोली ॥ २१ ॥ हेसखियो ! मैं या अद्भुत दुःखको कैसे कहौं हे सखियो ! रघुवंशको यह अयोग्य दूषण लग्यो ॥ २२ ॥ हे किंकरी ! मैं आपने पेटको गर्भ समेत देखौंहौं ताते रोयरहीहौं वासमय वाके इन वचनको सुनिकै वह किंकरीहू व्याकुल होजात भई ॥ २३ ॥ तव सव कन्या मिलिकै रानीके समीप जात भई और

इदमप्यद्भुतंदुःखंप्रवक्ष्यामि कथंसखि ॥ अयुक्तमभवद्बालिरघुवंशस्यदूषणम् ॥ २२ ॥ सगर्भमुदरंपश्य तेनरोदिमिकिंकरि ॥ तस्यास्तद्वचनंश्रुत्वाविह्वलासाभवत्तदा ॥ २३ ॥ तदातुकन्यकाःसर्वागताराज्ञी समीपतः ॥ विज्ञापयंतिकन्यायाःकारणंमहदद्भुतम् ॥ २४ ॥ भोराज्ञिकथयिष्यामःकन्याया वृत्तमद्भुतम् ॥ अभयंचेत्प्रदीयेतब्रूमःसर्वंसुविस्मिताः ॥ २५ ॥ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ ॥ अभयंदत्तमस्माभिःकथयध्वंयथा र्थंतः ॥ इतितद्वचनंश्रुत्वातावक्तुमुपचक्रमुः ॥ २६ ॥ कन्या ऊचुः ॥ ॥ अत्यद्भुतंमहादेविनभूतंनश्रु तं क्वचित् ॥ तच्छृणुत्वावशालाक्षि कन्यायावृत्तमद्भुतम् ॥ २७ ॥

चन्द्रवतीकन्याके अति अद्भुत कारणको कहत भई ॥ २४ ॥ हे रानी! जो तुम हमको अभयदान करो तो विस्मयमें परी भई हम सब आपकी कन्याको अद्भुत वृत्तांत कहैं ॥ २५ ॥ रानी बोली ॥ कि हमनै तुमको अभय दान कीन्हो तुम यथार्थ कहौं वा रानीके या वचनको सुनिके वे कहनेको आरंभ करत भई ॥ २६ ॥ कन्या बोलीं ॥ कि हे महादेवी ! यह अति अद्भुतहै न कहूँ

एसो भयो न कहूँ सुन्यो है सुंदरनेत्रवाली ! तुम वा कन्याके अद्भुत वृत्तांतको सुनो ॥ २७ ॥ हे देवी ! वाके दृष्टिमार्गमें न देवता न गंधर्व न असुर और न राक्षस आयेहैं और मनुष्यकी तौ बातही कहां है ॥ २८ ॥ ताहूपै वा कन्याके कुलको दूषण देनहारो गर्भभयो है या प्रकार उन कन्यानको अद्भुत वचन सुनिकै ॥ २९ ॥ वह रानी दुःखसों भरिकै मूर्छितहो भूमिमें गिरती

नदेवानचगंधर्वानासुरानचराक्षसाः ॥ तस्यादृष्टिपथेदेविनराणांचैवकाकथा ॥ २८ ॥ तथापितस्यागर्भो भूद्दुहितुःकुलदूषणम् ॥ इति तासां कुमारीणांश्रुत्वावचनमद्भुतम् ॥ २९ ॥ साराज्ञीदुःखसंपन्नामूर्छिताप तिताभुवि ॥ क्षणेनलब्धसंज्ञासाताःकन्याविससर्जह ॥ ३० ॥ राज्ञःसमीपंसागात्वाराज्ञी वचनमब्रवीत ॥ ॥ राज्ञ्युवाच ॥ शृणुष्वेदंमहाराजकन्यावृत्तंमहाद्भुतम् ॥ ३१ ॥ पुंसःसंसर्गहीनायाःकन्यायागर्भसंभवः ॥ कुलस्यदूषणंराजन्यशःकीर्तिविनाशकृत् ॥ रघुस्तद्वचनंश्रुत्वासकंपश्चाभवत्क्षणात् ॥ ३२ ॥

भई और कुछ देर पीछे चैतन्यहो उन कन्याको विसर्जन करत भई ॥ ३० ॥ तब रानी राजाके पास जायके वचन बोलत भई ॥ रानी बोली ॥ कि हे महाराज ! कन्याका महाअद्भुत वृत्तांत सुनिये ॥ ३१ ॥ पुरुषके संसर्गसों रहित कन्याके गर्भका संभवहै हे राजा ! यह गर्भ कुलको दूषण देनहारो और यश तथा कीर्तिको नाश करनहारोहै तब रघु रानीके यह वचन सुनिकै क्षण

मात्र कंपयुक्त होतभयो ॥ ३२ ॥ तापीछे राजा क्रोधितहोकै कहत भयो कि, हाय पापिनी ! तैने यह कहा कियो ऐसे कहिकै लज्जित होकै कन्याके त्याग करनेकी आज्ञाको देतभयो ॥ ३३ ॥ तब रोवतीभई वा कन्याको सेवक रथमें वैठाके वनको लेजात भये और लेके सूने वनमें छोडि देतभये ॥ ३४ ॥ और व्याघ्र सिंहोंकरि सेवन करेगये वा वनमें कमलके समानहैं चंचल नेत्र

ततःक्रुद्धोनृपःपापेहाकन्येकिमिदंकृतम् ॥ इत्युक्त्वाज्ञांददौराजाकन्यात्यागेविलज्जितः ॥ ३३ ॥ रोदमानाचसाकन्याभृत्यैर्नीतावनंप्रति ॥ रथमारोपयित्वाचनिक्षिप्तानिर्जनेवने ॥ ३४ ॥ एकाकिनीवनेतस्मिन्व्याघ्रसिंहनिषेविते ॥ विह्वलाभयसंपन्नाकन्याकमललोचना ॥ ॥ ३५ ॥ रुदंतीतारशब्देनहाविधेकिमिदंकृतम् ॥ वीक्षंतीचादिशःसर्वायूथभ्रष्टामृगीयथा ॥ ३६ ॥ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेचंद्रवतीपरित्यागोनामद्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

जाके ऐसी अकेली वह कन्या भयसों भीतहोकै व्याकुलहो जात भई ॥ ३५ ॥ और ऊँचे स्वरसों रोय रोयके ऐसे कहत भई कि, हाय विधाता तुमने यह कहा कियो और झुंडते बिछडी भई हरिणीके समान चारों दिशानकी ओर देख रहीही ॥ ३६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांचंद्रवतीपरित्यागो नाम द्वितीयोऽध्यायः ॥ २॥

ऋषि बोले ॥ सत्य धर्ममें पर अर्थात् सत्य धर्महि जिनको प्यारोहै ऐसे कोई मुनि कंद मूल और फलनकी चाहनासे वहाँ आवतभये और वा कन्याको देखत भये ॥ १ ॥ हे राजन्! वा सुंदरीको वहाँ देखिकै अपने मनमें तर्कको करते हुए आगे ठाढे होत भये कि, यह कहा दमयंतीहै अथवा चित्रलेखाहै अथवा तिलोत्तमा नाम अप्सरा है ॥ २ ॥ उर्वशीहै वा मेनकाहै वा अहल्याहै अथवा

॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ कश्चित्तत्रसमायातःसत्यधर्मपरोमुनिः॥कंदमूलफलाकांक्षीददर्शतत्रकन्यकाम् ॥ १ ॥ दृष्ट्वातांसुंदरींराजंस्तर्कयंश्चाग्रतःस्थितः ॥ दमयंतीभवेत्किंस्विच्चित्रलेखातिलोत्तमा ॥ २ ॥ उर्वशीमेनकावापिअहल्यारोहिणीभवेत् ॥ यक्षिणीवापिगंधर्वीकिन्नरीनागकन्यका ॥ ३ ॥ राजकन्याथवाश्रेष्ठाइतिविस्मयमागतः ॥ शोभतेवनमध्येतुविद्युल्लेखायथाघने ॥ ४ ॥ करौरागेणशोभंतौविधात्रारचितौ शुभौ ॥ नाभिश्चदक्षिणावर्तात्रिवलीमध्यसंस्थिता ॥ ५ ॥ अत्यद्भुतंचतद्रूपंदृष्ट्वाप्रोवाचकन्यकाम् ॥ कात्वं कस्यासिरंभोरुकिमर्थंवनमागता ॥ ६ ॥

रोहिणीहै वा यक्षिणीहै कि गंधर्वी है किन्नरीहै कि, नागकन्याहै ॥३॥ अथवा कोई श्रेष्ठ राजाकी कन्याहै ऐसे विस्मयको प्राप्तहोत भये यह वनके मध्यमें ऐसे शोभितहै जैसे मेघनमें बिजली शोभित होयहै ॥ ४ ॥ विधाता करिकै रचेभये याके सुंदर हाथ लाल रंगसों शोभायमान हैं और याकी नाभि दक्षिणावर्त्त त्रिवलीके मध्यमें शोभितहै ॥ ५ ॥ वाको अति अद्भुत रूप देखिकै वा कन्यासों बोलत

भये, कि हे रंभोरु ! तू कौनहै और कौनकीहै वनमें काहेको आई है ॥ ६ ॥ ऋषिको यह वचन सुनिकै वह कन्या बोलत भई हे ऋषि महाराज ! कुलको दूषण लगावनेहारी जो मैं हौं तासों आप काहेको पूछैं हैं नतौ मैं सुरी हौं न गंधर्वी हौं न आसुरी हौं और न किन्नरी हौं ॥ ७ ॥ मैं रघुराजाकी पुत्री हौं मेरे पिताने मोको गर्भके दूषणसों या शून्य वनमें त्याग कियो है ॥ ८ ॥ ऋषि बोले ॥ कि हे

ऋषेस्तुवचनंश्रुत्वाकन्योवाचऋषिंप्रति ॥ किमर्थंपृच्छसेविप्रमामत्रकुलदूषणाम् ॥ नाहंसुरीनगंधर्वी नासुरी नचकिन्नरी ॥ ७ ॥ रघोस्तुदुहिताचाहंपितामेगर्भदूषणात् ॥ त्यक्तवान्निर्जनेऽरण्येरघुर्मामत्रसुव्रत ॥ ८ ॥ ॥ ॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ अद्यप्रभृतिमे पुत्री धर्मतस्त्वंशुभानने ॥ गृहीत्वातांततःकन्यामृषिराश्रममागतः ॥ ९ ॥ अस्मिन्ममाश्रमेरम्येसुखंतिष्ठनृपात्मजे ॥ उदरंववृधेतस्यागर्भोसौदिवसैःक्रमात् ॥ १० ॥ मासे तुनवमेतस्याःप्रसूतिरभवन्नृप ॥ नासाग्रेणचकन्यायाःपुरुषःसर्वलक्षणः ॥ ११ ॥

सुंदर मुखवाली ! आजसों लगाके तू मेरी धर्मकी पुत्री है ता पीछे वा कन्याको लेकै ऋषि अपने आश्रमको आवत भये ॥ ९ ॥ और ऐसे कहत भये कि, हे राजाकी पुत्री ! तू या मेरे आश्रममें सुखसों वास कर और दिननके बीतने पै क्रमसों वाके उदरमें गर्भ वृद्धि को प्राप्त होतभयो ॥ १० ॥ और नवमें महीनामें वाके प्रसूति भई और नासिकाके अग्रमें होकै वा कन्याके सब लक्षणन करि

युक्त पुरुष उत्पन्न होत भयो ॥ ११ ॥ ज्ञानवान् तथा बुद्धिमान् और विनय करिकै युक्त वा बालकको पालती भई वह चंद्रवती दुःखित होती भई तब वह राजपुत्री वनके मध्यमें रोवते भये वा बालकसों कहत भई ॥ १२ ॥ कि मोको पाप लगावनहारो तू काहेको रोवे है हे पुत्र तेरेही कारणसों मेरी यह दशा भई है ॥ १३ ॥ वैशंपायन बोले ॥ कि एक वर्ष पूरो होने पै वा कन्याने

ज्ञानवान्बुद्धिसंपन्नोबालोसौविनयान्वितः ॥ एतादृशंपालयंतीदुःखार्तासमवर्तत ॥ एकदारण्यमध्येतंरुदंतं सानृपात्मजा ॥ १२ ॥ किमर्थंरोदिषित्वंमेपापसम्पर्ककारक ॥ त्वदीयेकारणेपुत्रह्यवस्थेयंममेदृशी ॥ १३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ तयासंवत्सरेपूर्णेमंजूषंतत्रकारितम् ॥ १४ ॥ तस्याभ्यंतरतःपुत्रंयत्नेनपरि वेष्टितम् ॥ कृत्वातत्रवनोद्देशेगंगामध्येविनिक्षिपत् ॥ १५ ॥ तयावाक्यंचकथितंपुत्रस्याग्रेतुकन्यया ॥ नजानामिकथंचिद्वैकुतस्तेगर्भसंभवः ॥ १६ ॥ येनतेगर्भसंभूतिर्येनजातोसिपुत्रक ॥ तेनत्वंमिलयेः सम्य क्यद्यहंदोषवर्जिता ॥ १७ ॥

एक मंजूषा बनवाई ॥ १४ ॥ और जतनसों लपेटे भये वा पुत्रको वा मंजूषामें स्थापित करिकै वा वनमें गंगाकी धारमें डारि देत भई ॥ १५ ॥ और वा कन्याने पुत्रके आगे यह वचन कह्यो कि, मैं नहीं जानो हौं कि तेरे या गर्भकी उत्पत्ति कहांते भई ॥ १६ ॥ ताते हे पुत्र ! तू जाते उत्पन्न भयो है तासों तोको मिलाऊं हौं जो मैं सत्यही दोष करिकै वर्जित हौं ॥ १७ ॥

वैशंपायन बोले ॥ वा समय वह कन्याको पुत्र गंगाकी धारमें वहतो भयो जहां ब्राह्मण तप करि रहे हैं वहाँ किनारेसों लागि जात भयो ॥ १८ ॥ उन ब्राह्मणके मध्यमें वडे योगी उद्दालक मुनि गंगाकी धारमें आई भई वा मंजूषाको देखत भये ॥ १९ ॥ वा वड़ी मंजूषामें शुभहैं लक्षण जाके ऐसे और जैसो पहले कवहूं नहीं देखो ऐसे सुंदर पुत्रको देखिकै विस्मयको प्राप्त होतभये ॥२०॥तव ध्यान

॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ गतःप्रवाहेगंगायास्तरन्कन्यासुतस्तदा ॥ आगतश्चनदीतीरेयत्रतप्यंतिवाडवाः ॥ १८ ॥ तेषांमध्येमहायोगीमुनिरुद्दालकस्तथा ॥ आगतंतंप्रवाहेणददर्शमुनिपुंगवः ॥ १९ ॥ मंजूषेविपुलेतस्मिन्बालकंशुभलक्षणम् ॥ सुंदरादृष्टपूर्वंतुदृष्ट्वाविस्मयमागतः ॥ २० ॥ ध्यानेनज्ञातवानूसर्वंस्ववीर्यप्रभवंसुतम् ॥ ज्ञात्वाथस्वाश्रमेबालंवासयामासलालयन् ॥ २१ ॥ पितेतिवदतेबालोमुनिमुद्दालकंप्रति ॥ तत्रैवरमतेनित्यमाश्रमेचातिशोभने ॥ २२ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेपितुः पुत्रोपस्पर्शनंनामतृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

करिकै अपने वीर्यसों उत्पन्न भये पुत्रको जानत भये और जानिकै वा बालकको प्यारसों अपने आश्रममें राखत भये ॥२१॥ और वह बालक उद्दालक मुनिको पिता ऐसे कहतो और वहांही अति सुंदर आश्रममें आनंदसों सदा रमण करतो ॥२२॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांपितुःपुत्रोपस्पर्शनंनाम तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

वैशंपायन बोले ॥ रघुवंशमें उत्पन्न कन्या पुत्रके शोकसों व्याकुल हो रोती भई गंगाके तीरमें आवत भई ॥ १ ॥ ता पीछे पुत्र को देखती और पुकारती शोकमें व्याकुल हो वह व्रत करनहारी रोवती भई गंगाके तीरमें जात भई ॥ २ ॥ वाने वहाँ गंगाके तीरमें सुंदर आश्रम देख्यो और वा आश्रममें खेलतेभये वा पुत्रको देखत भई ॥ ३ ॥ वा आश्रममें वाके मित्र जे बालक हैं उनके

वैशंपायनउवाच ॥ ॥ रघुवंशोद्भवाकन्यारुदतीशोकविह्वला ॥ पुत्रशोकेनसंतप्तागङ्गातीरेसमागता ॥ १ ॥ वीक्षंतीचततःपुत्रंक्रंदंतीशोकविह्वला ॥ रोदमानानदीतीरेप्रयाताव्रतचारिणी ॥ २ ॥ दृष्टश्चैवाश्रमोरम्योगङ्गातीरेसुशोभनः ॥ पश्यतिस्मसुतंतत्रक्रीडमानं तमाश्रमे ॥ ३ ॥ वयस्यैर्बालकैःसार्धंक्रीडमानंतमाश्रमे ॥ पप्रच्छमृगशावाक्षीबालकंमुदितानना ॥ ४ ॥ कस्त्वदीयःपितापुत्रकस्यायंचाश्रमःशुभः ॥ किंनामतस्यविप्रस्य पृच्छाम्येतद्वदस्वमे ॥ हर्षितंमेमनोभूरिदर्शनात्तवपुत्रक ॥ ५ ॥ पुत्रउवाच ॥ ॥ ममातापिताचैवमुनिरुद्दालकोमहान् ॥ गतोसौफलमूलार्थमग्निहोत्रस्यकारणात् ॥ ६ ॥

साथमें खेलतेभये वा बालकसों मृगके बच्चेकेसे हैं नेत्र जाके और प्रसन्न है मुख जाको ऐसी वह कन्या पूँछत भई ॥ ४ ॥ कि हे पुत्र ! तुम्हारो पिता कौनहै और यह शुभ आश्रम कौनको है और जिनको यह आश्रम है उन मुनीश्वरको कहा नाम है यह मैं पूँछो हौं सो तुम मोसों कहौ हे पत्रक ! तुम्हारे देखनेसों मेरो मन बहुतही प्रसन्न भयो है ॥ ५ ॥ पुत्र बोला ॥ बडे उद्दालक मुनि

मेरे मातापिता हैं सो वे अग्निहोत्रके कारण फलमूल लेनेको वनमें गये हैं ॥ ६ ॥ और समिध तथा कुशानको लेकै आवैंगे फिर देवता और पितरनके कार्यके लिये मैं अग्निशालाको लीपूंगा ॥ ७ ॥ और मैं यहाँ सदा उनकी आज्ञा करों हों तव पुत्रको यह वचन सुनिकै माता वचन बोलत भई कि, हे पुत्र ! तू मोको माता जान और स्वस्थ होजा ॥८॥ अग्निहोत्रके लिये मैं शालाको लीपों हौं ॥९॥ ऐसे

गृहीत्वासमिधोदर्भानागमिष्यतिचैवहि ॥ देवतापितृकार्यार्थमग्निशालाविलेपनम् ॥ ७ ॥ करोमिसततंह्यत्रत स्याज्ञाक्रियतेमया ॥ पुत्रस्यवचनंश्रुत्वामातावचनमब्रवीत् ॥ विद्धिमांमातरंपुत्रत्वंस्वस्थोभवपुत्रक ॥ ८ ॥ शालायामग्निहोत्रार्थमुपलेपंकरोम्यहम्॥ ९ ॥ एवमुक्त्वाचतत्कृत्वापुनर्गंगातटंगता ॥ १० ॥ वैशंपायनउवाच ॥ एतस्मिन्नंतरेप्राप्तोमुनिरुद्दालकोवनात् ॥ ११ ॥ विलेपिताचसकलाह्यग्निशालासुशोभना ॥ तुष्टोहमद्यमेपुत्रह्य ग्निहोत्रस्यलेपनात् ॥ १२ ॥ ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ निःसंशयंमयाताततकर्मकिंचित्कृतंनहि ॥ मात्राममकृ तंसर्वमुपलेपंतवाश्रमे ॥ १३ ॥

कहिकै शालाको लीपिकै फिर गंगाके तटको जात भई ॥ १० ॥ वैशंपायन बोले ॥ या अंतरमें उद्दालक मुनि वनते आवतभये और लिपीभई शालाको देखि वचन बोलत भये ॥ ११ ॥ यह सब यज्ञशाला बहुत सुंदर लीपी गई है हे पुत्र ! मैं अग्निहोत्रशालाके लीपनेसों आज बहुत प्रसन्न हौं ॥ १२ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे पिताजी ! मैंने निःसंदेह कोई काम नहीं कीन्हो है मेरी माताने यह सब

लीपनो आपके आश्रममें कीन्हो है ॥ १३ ॥ उद्दालक बोले ॥ हे पुत्र ! तेरी माता कहाँ है काम करिकै काहेको चलीगई पिताके या वचनको सुनिकै पुत्र पितासों फिरिकै बोलत भयो ॥ १४ ॥ हे पिता ! काम करिकै पीछे गंगास्नानको गई है तब मुनीश्वर उद्दालक प्रसन्न ह्वैकै अग्निहोत्र करत भये ॥ १५ ॥ वे ऋषि देवकार्य और पितृकार्य करिकै पुत्रसों बोलत भये कि, हे पुत्र ! तुम मोको

॥ उद्दालकउवाच ॥ ॥ क्वचास्तेपुत्रतेमाताकृत्वाकर्मकथंगता ॥ ॥ पितुरेतद्वचःश्रुत्वापुत्रःपितरमब्रवीत् ॥ १४ ॥ कृत्वाकर्मततस्तातगंगास्नानार्थिनीगता ॥ संहृष्टोऽसौऋषिस्तस्मिन्नग्निहोत्रंचकारह ॥ १५ ॥ सकृत्वादेवकार्यंचपितृकार्यंतथैवच ॥ उवाचैनंततःपुत्रंमातरंदर्शयस्वमाम् ॥ १६ ॥ ॥ पुत्रउवाच ॥ ॥ आगच्छस्वाश्रमंमातराहारंतेददाम्यहम् ॥ पिताचैवाश्रमंप्राप्तस्तिष्ठमातर्यथेच्छया ॥ १७ ॥ ॥ मातोवाच ॥ ॥ अयुक्तंतेवचःपुत्रश्रुतंवैरोमहर्षणम् ॥ अधर्मयुक्तंवाक्यंतेनप्रशंसतिधर्मवित् ॥ १८ ॥ पितावाप्यथवाभ्रातामातावाप्यथमातुलः ॥ ददातिकन्यकांलोकेनपुत्रोमातरंददेत् ॥ १९ ॥

अपनी माताको दिखाओ ॥ १६ ॥ पुत्र बोल्यो ॥ हे माता ! अपने आश्रमको आओ तुमको मैं भोजन देउँ पिताहू आश्रममें आय गयेहैं हे माता ! अपनी इच्छापूर्वक रहौ ॥ १७ ॥ माता बोली ॥ हे पुत्र ! तेरो वचन अयोग्य है और श्रवण करनेसों निश्चय रोमांच करावनहारोहै और अधर्मयुक्त या तुम्हारे वचनकी धर्मके जाननेहारे प्रशंसा नहीं करैं हैं ॥ १८ ॥ पिता अथवा भ्राता

अथवा माता वा मामा लोकमें कन्या देतेहैं और पुत्र माताका लोकमें दान नहीं करैहै ॥ १९ ॥ हे पुत्र ! ताहूपै तुम जा स्थानमें पहले हे वहांई जाओ ॥ २० ॥ तापीछे वह बालक प्रसन्न होके वाही श्रेष्ठ आश्रमको लौटकारि आवत भयो और पिताके समीप जात भयो और माताको कह्यो भयो वचन पितासों कहत भयो ॥ २१ ॥ यह मेरी माताहै और हे ऋषिनमें श्रेष्ठ ! आप मेरे

तथापितत्रगच्छत्वंयत्रपूर्वंचतिष्ठासि ॥ २० ॥ ततोनिवृत्तःसंहृष्टस्तत्रैवचवराश्रमे ॥ गतोसौपितृपार्श्वेतुमात्रा प्रोक्तंतमब्रवीत् ॥२१॥ एषामदीयाजननीपितात्वमृषिपुंगव ॥ ॥उद्दालकउवाच ॥ ॥ युक्तंसावदतेवाक्यंपुत्र मेनिश्चयंशृणु ॥ २२ ॥ मातरंपृच्छपुत्रत्वंकस्यवंशेसमुद्भवा ॥ पुत्रोहंतेकथंजातःकथमागमनंकृतम् ॥ २३ ॥ एवंवदयथान्याय्यंसर्वंपृच्छयथार्थतः ॥ सपितुर्वचनंश्रुत्वापप्रच्छमातरंप्रति ॥ २४ ॥ कथयस्वांबिकेसत्यंपि तात्वांपृच्छतेऽधुना ॥ कस्यवंशेसमुत्पन्नाकथंपुत्रोह्यहंतव ॥ २५ ॥

पिताहैं ॥ उद्दालक बोले ॥ वह तुम्हारी माता योग्य वचन कहैहै हे पुत्र ! मेरो निश्चय सुनौ ॥ २२ ॥ हे पुत्र ! तुम मातासों पूछौ कि, तू कौनके वंशमें उत्पन्नहै और मैं तेरो पुत्र कैसे भयो हौं और कैसे यहाँ आगमन कियोहै ॥ २३ ॥ ऐसे न्यायपूर्वक कहौ और सब यथार्थ पूँछो तब वह बालक पिताको वचन सुनिकै मातासों पूँछतभयो ॥ २४ ॥ हे माता ! तू सत्य कह या समय पिता तो

सों पूछैं हैं कि, तू कौनके वंशमें उत्पन्नहै और मैं तेरो पुत्र कैसेहौं ॥ २५ ॥ और यहाँ तेरो आवनो कैसे भयो सो सब तू विधि पूर्वक सत्य कह ॥ माता बोली कि, हे महाप्राज्ञ ! जो तू मोसो पूछै है वाहि सत्य सत्य सुन ॥ २६ ॥ पहिले कर्मके अनुयोगसों जो विचेष्टित भयो है वाहि मैं न्यायपूर्वक कहौंहौं एकाग्रमन होके सुन ॥ २७ ॥ तीनो लोकनमें विख्यात रघुनामसो प्रसिद्ध

कथमागमनंह्यत्रसत्यंब्रूहियथाविधि ॥ ॥ मातोवाच ॥ ॥ सत्यंशृणुमहाप्राज्ञयन्मांत्वंपरिपृच्छसि ॥ २६ ॥ पूर्वकर्मानुयोगेनयत्तुजातंविचेष्टितम् ॥ कथयामियथान्याय्यंशृणुष्वैकाग्रमानसः ॥ २७ ॥ रघुर्नामेतिविख्यातोराजात्रैलोक्यविश्रुतः ॥ तस्यवंशेसमुत्पन्नापुत्रीगिरिसुताइव ॥ २८ ॥ धवलगृहसंस्थाहंसखीभिः परिवेष्टिता ॥ कन्यादशसहस्रेणरमंतीसुखसंयुता ॥ २९ ॥ ऋतौवसंतेसंप्राप्तेगंगातीरेसुपुष्पिते ॥ विज्ञापितासखीभिश्चगंगास्नानार्थिनीगता ॥ ३० ॥ तत्रस्नानंप्रकुर्वत्यामयादृष्टंजलोपरि ॥ संतरद्वेष्टितं दर्भैःपुटकंकमलस्यहि ॥ ३१ ॥

राजा होत भयो ताके वंशमें मैं पार्वतीके समान पुत्री उत्पन्न भई हौं ॥ २८ ॥ धवल घरमें अर्थात् महलमें स्थित मैं दश हजार कन्यासों वेष्टित आनन्दसों विहारकरतीथी ॥ २९ ॥ एकवार वसंत ऋतुके आने पैं सुंदर फूलनसे शोभायमान गंगाके तटमें सखिनकरिकै प्रार्थना करी गई मैं गंगास्नानको जातभई ॥ ३० ॥ वहां स्नान करती भई मैंने जलके ऊपर वह तो कुशानसों ल

पेख्यो भयो कमलके पातनको दोना देख्यो ॥ ३१ ॥ मैंने सखिनसों लेके वा दोनाको सूँघ्यों वामेंते वीर्य मेरी नासिकामें चलो जात भयो ॥ ३२ ॥ हे विप्र ! तासों मेरे गर्भ होजात भयो यामें संदेह नहीं है तापीछे सखिनकरि जतायो गयो वह रघुराजा बहुतही क्रोधित होत भयो ॥ ३३ ॥ तापीछे नहीं जानो है गर्भ जाने ऐसी मोको सूने वनमें पिताने छोड़ि दियो तब रोवती मो

तद्गृहीत्वासखीहस्तादाघ्रातंकमलंमया ॥ तस्याभ्यंतरतोवीर्यंनासाभ्यंतरतोगतम् ॥ ३२ ॥ संभूतश्चततोविप्रममगर्भोनसंशयः ॥ सखीभिर्ज्ञापितोराजाकोपाविष्टस्ततोरघुः ॥ ३३ ॥ अज्ञातगर्भांमांतातोवनेतत्याजनिर्जने ॥ रोदमानाह्यहंदृष्टामुनिनातुफलार्थिना ॥ ३४ ॥ ममोपरिकृपांकृत्वाह्यानीतास्वाश्रमंप्रति ॥ प्रसूताचाश्रमेतस्यभवाञ्जातोसिपुत्रक ॥ ३५ ॥ नासिकातः समुत्पन्नोयतस्त्वंममबालकः ॥ नासिकेतेतितज्ञात्वानामप्रोक्तंमहात्मना ॥३६॥ ततःसंस्थाप्यमंजूषेनिक्षिप्तस्त्वंमयाजले ॥ पुनर्वियोगदुःखार्तावीक्षंतीत्वांसमागता ॥३७॥

को फलनके लेवेको आये भये एक मुनि देखत भये ॥ ३४ ॥ और मेरे ऊपर दया करिकै मोको अपने आश्रममें लावत भये तब उन मुनिके आश्रममें हे पुत्र ! तुम उत्पन्न भये ॥ ३५ ॥ जाते तुम मेरे बालक नासिकाते उत्पन्न भये ताते उन महात्माने नासिकेत यह नाम राख्यो ॥ ३६ ॥ तापीछे मैंने तुमको मंजूषामें धरिकै गंगाके जलमें

छोड़िदियो फिर तुम्हारे विछुडनेसे दुःखीहो तुमको ढूंढतीभई यहां आई हौं ॥ ३७॥ यही मैंने आपनी स्थितिको कारण कह्यो तापीछे नासिकेत पिताके समीप जायकै सब वृत्तांत कहत भयो ॥ ३८ ॥ हे तात! मेरी माताने जो न्यायके अनुसार कह्योहै ताहि सुनो रघुराजाकी पुत्री मैं गंगास्नानके लिये आई ॥ ३९ ॥ कुशानसों लिपट्यो आयेभये वा कमलके दोनाको

एतदेवमयाप्रोक्तमात्मीयस्थितिकारणम् ॥ ततोगत्वापितुःपार्श्वेनासिकेतोन्यवेदयत् ॥ ३८ ॥ शृणु तातयथान्याय्यंमात्रात्वभिहितंमम ॥ रघोराज्ञस्तुदुहितागंगास्नानार्थमागता ॥ ३९ ॥ आगतंपद्मपुटकंदर्भेणपरिवेष्टितम् ॥ दृष्ट्वापद्मगतंवीर्यंकिमेतदितिचाब्रवीत् ॥ ४० ॥ ततःसातत्समाघ्रायजलेचैवव्यसर्जयत् ॥ तस्मिन्नेवाघ्रातमात्रेजातं गर्भस्यधारणम् ॥ ४१ ॥ तच्छ्रुत्वाक्रोधमापन्नोराजारघुरुदारधीः ॥ तत्याजकन्यकांचैववनेसिंहादिसेविते ॥ ४२ ॥ एवंसर्वस्ववृत्तांतंनासिकेतेनभाषितम् ॥ तस्यतद्वचनं श्रुत्वाऋिषिर्विस्मयमागतः ॥ ४३ ॥

और वामें धरेभये वीर्यको देखि यह कहाहै ऐसे कहत भई ॥ ४० ॥ ता पीछे वह वाहि सूँघिकै जलमें छोड़ि देत भई वाके सूँघनेहीसों गर्भको धारण भयो ॥ ४१ ॥ सो सुनिकै उदारबुद्धि राजा रघु क्रोधित हो सिंह आदिकन करि सेवनः करे गये वनमें कन्याको छोडि देत भये ॥ ४२ ॥ याप्रकार अपनो सब वृत्तांत नासिकेतने कह्यो वाको वह वचन सुनिकै ऋषि विस्मयको

प्राप्त होत भये ॥ ४३ ॥ और कहत भये कि, हे प्रजापति ! तुम्हारो वचन सत्य भयो ऐसे कहिकै वे मुनि फिर वा पुत्रसों बोलत भये ॥ ४४ ॥ कि हे पुत्र ! तुम अपनी मातासमेत इहां तपोवनमें रहो और वा तुम्हारी माताके लिये मैं रघुराजाके घर जाउँगो ॥ ४५ ॥ ऐसे कहिकै वह विप्र कन्याकी चाहनासों चलत भयो तापीछे क्रमसों सुंदर रघुके मंदिरमें प्राप्त होत

अहोप्रजापतेसत्यंसंभूतंवचनंतव ॥ इत्युक्त्वास्वगतंविप्रःपुनःपुत्रंसचाब्रवीत् ॥ ४४ ॥ तिष्ठपुत्रत्वमत्रैवमात्रासहतपोवने ॥ तस्याश्चार्थीगमिष्यामिरघोराज्ञश्चवेश्मनि ॥ ४५ ॥ एवमुक्त्वाततोविप्रः कन्यार्थीसमगच्छत ॥ क्रमेणैवततःप्राप्तःशुभंचरघुमंदिरम् ॥४६॥ सदृष्ट्वाविप्रमायांतंज्वलंतमिवपावकम् ॥ उत्थायचार्घ्यपाद्याद्यैरार्चयच्चासनाद्रघुः ॥ ४७ ॥ कृत्वाप्रदक्षिणंचैवमधुपर्केणचार्चयत् ॥ सुखासीनंचविप्रर्षिंरघुर्वचनमब्रवीत् ॥ ४८ ॥ अद्यमेसफलंजन्मह्यद्यमेसफलाःक्रियाः ॥ अद्यमेसफलंदानंयज्जातंतवदर्शनम् ॥ ४९ ॥

भयो ॥ ४६ ॥ वह राजा रघु जलते भये अग्निके समान आवते भये ब्राह्मणको देखि आसनते उठिकै अर्घ्यपाद्य आदिसों उनको पूजन करत भये ॥ ४७ ॥ राजा रघु उनकी प्रदक्षिणा करिकै मधुपर्कसों पूजन करत भये फिर सुखसों बैठेभये उन मुनीश्वरसों वचन बोलत भये ॥ ४८ ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो और आज मेरी क्रिया सफल भई और आज मेरो दान सफल भयो

जो आपको दर्शन भयो ॥ ४९ ॥ शत सहस्र कहिये एक लाख गौ और सौ करोड सुवर्ण और घोडों आदि समेत सब राज्य आपको मैंने निवेदन कियो अर्थात् सब आपको भेंट कियो ॥ ५० ॥ उद्दालक बोले ॥ मैं घोडे आदि और सुवर्णके सौ करोड तथा राज्य नहीं चाहौंहौं एक कन्या मैं मागों हौं ॥ ५१ ॥ रघु बोले ॥ कि हे विप्र ! मैं तुमको राज्य

गवांशतसहस्रंमेहेमकोटिशतानिच ॥ तुरंगमादिसर्वंमेराज्यंतुभ्यंनिवेदितम् ॥ ५० ॥ ॥ उद्दालकउवाच ॥ नाहंतुरंगमादीनिहेमकोटिशतानिच ॥ राज्यंनेच्छामिराजेंद्रकन्यामेकामहंवृणे ॥ ५१ ॥ ॥ रघुरुवाच ॥ ॥ राज्यंददामितेविप्रकन्याममनविद्यते ॥ कन्यैकामेपुराह्यासीत्सामृतामुनिसत्तम ॥ ५२ ॥ ॥ उद्दालक उवाच ॥ ॥ नसामृतातुकन्यातेममतिष्ठतिचाश्रमे ॥ मह्यंतांदेहिराजेंद्र सत्यधर्मपरायण ॥ ५३ ॥ ॥ रघुरुवाच ॥ ॥ आश्रमेतुकथंकन्यात्वदीयेविप्रतिष्ठति ॥ कौतूहलमिदंमन्ये कथयस्वयथार्थतः ॥ ५४ ॥

देउँहौं कन्या मेरे नहीं है पहले मेरे एक कन्या थी हे मुनिश्रेष्ठ ! वह मरिगई ॥ ५२ ॥ उद्दालक बोले ॥ वह तुम्हारी कन्या मरी नहीं है मेरे आश्रममें स्थित है हे सत्यधर्ममें तत्पर राजा ! तुम वा कन्याको हमें दान करो ॥ ५३ ॥ रघु बोले ॥ हे विप्र ! वह कन्या आपके आश्रममें कैसे स्थित है मैं याको वडो कौतूहल मानो हौं हे विप्र ! यथार्थ कहौ ॥ ५४ ॥

॥ ऋषि बोले ॥ पहले प्रजापतिने मेरे लिये जो वचन कहो हो वह दैवके संयोगसों पूरो भयो और वाको सुर तथा असुरहू निवारण नहीं करि सकै हैं ॥ ५५ ॥ मैं वंशकी स्थितिके लिये पद्मभू जे ब्रह्मा हैं तिनके समीप गयो हो वहाँ जायकै हे राजा ! मैंने वंशकी बढावनहारी भार्या माँगी ॥ ५६ ॥ हे राजानमे श्रेष्ठ ! तव ब्रह्माने मोसों कह्यो कि, पहले तुम्हारे पुत्र होयगो और पीछे सूर्यके वंशमें

॥ ऋषिरुवाच ॥ ॥ प्रजानांपतिनावाक्यंपुरायन्मेनियोजितम् ॥ निर्मितंदैवसंयोगाद्दुर्वारंतत्सुरासुरैः ॥ ५५ ॥ वंशस्थितेःकारणायगतोहंयत्रपद्मभूः ॥ गत्वातत्रमयाराजन्भार्यावंशविवर्द्धिनी ॥ ५६ ॥ प्रार्थिताराजशार्दूलसूर्यवंशसमुद्भवा ॥ तेनोक्तंप्रथमंपुत्रःपश्चाद्भार्याभविष्यति ॥ ५७ ॥ तवभार्याचवि प्रेंद्ररघुवंशसमुद्भवा ॥ एवमुक्त्वाततोब्रह्माक्षणेनांतरधीयत ॥ ५८ ॥ ततोहमाश्रमेराजन्नागतश्चतयान्वितः ॥ कथंमेप्रथमंपुत्रोभार्यापश्चाद्भविष्यति ॥ ५९ ॥ तप्यमानेचतपसिरेतोत्सर्गोबभूवह ॥ ६० ॥ तन्मया पद्मपुटकेवीर्यंक्षिप्तंप्रयत्नतः ॥ कुशैश्चवेष्टयित्वातुगंगामध्येविसर्जितम् ॥ ६१ ॥

उत्पन्न भार्या होयगी ॥ ५७ ॥ हे विप्रेंद्र ! सूर्यवंशमें उत्पन्न तुम्हारी भार्या होयगी ऐसे कहिकै ब्रह्मा वहाई अंतर्धान हो जात भये ॥ ५८ ॥ हे राजा ! तापीछे चिंतायुक्त होके मैं आश्रममें आवत भयो कि, मेरे पहले पुत्र कैसे होयगो और पीछे भार्या हो यगी ॥ ५९ ॥ वनमें तप करत भयो जो मैं हों ताके वीर्यको त्याग भयो ॥ ६० ॥ वह वीर्य मैने कमलके दोनोंमें यत्नसों

स्थापित कियो फिर वाको कुशासनसों लपेटिकै गंगाके मध्यमें छोडिदियो ॥ ६१ ॥ हे राजन् ! ता पीछे वह कन्या गंगास्नानको आवत भई तब गंगामें आये भये वीर्यको सूंघत भई ॥ ६२ ॥ वाही मेरे वीर्यसों गर्भकी उत्पत्ति भई यामें संदेह नहीं है नासिकेत नामसों प्रसिद्ध यह पुत्र नासिकाके अग्रमें होके निकर्यो है याहीते याको नासिकेत नाम भयोहै ॥ ६३ ॥ वैशंपायन

ततस्तेकन्यकाराजन्गंगास्नानार्थमागता ॥ तदाघ्रायच्युतंसम्यग्गंगामध्येसमागतम् ॥ ६२ ॥ तेनैवगर्भसंभूतिर्ममवीर्यान्नसंशयः ॥ नासाग्रेणतुनिष्क्रांतोनासिकेतइतिश्रुतः ॥ ६३ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ततोविस्मयमापन्नोरघुरंतःपुरेऽव्रजत् ॥ तद्वृत्तांतंततोराजास्वमहिष्यैन्यवेदयत् ॥ ६४ ॥ राजासभांसमागत्यमुनिंवचनमब्रवीत् ॥ ॥ रघुरुवाच ॥ कन्यांददामितेविप्रशृणुमेपरमंवचः ॥ ६५ ॥ रथेशुभतरेरम्येस्थित्वागच्छस्वमाश्रमम् ॥ ममानुजीविभिर्युक्तआनयस्वसुतांमम ॥ ६६ ॥

बोले ॥ ता पीछे बड़े विस्मयको प्राप्तहो वह रघुराजा रनवासमें जात भयो ता पीछे राजा उस वृत्तांतको रानीसों कहत भयो ॥ ६४ ॥ फिर राजा सभामें आयकै मुनिसों वचन बोलत भयो ॥ रघु बोले ॥ कि, हे विप्र ! मैं तुमको कन्या देता हौं मेरो परम वचन सुनो ॥ ६५ ॥ बहुत अच्छे सुंदर रथमें बैठिकै अपने आश्रमको आप जाँय और

मेरे नौकरन समेत मेरी वेटीको ले आओ ॥ ६६ ॥ वा राजा करि ऐसे कहे गये वे ऋषि वैसाही करत भये वा समय पुत्रसमेत रथमें वैठायकै वा कन्याको लावत भये ॥ ६७ ॥ तव राजाने प्रसन्न हो भक्तिकी बढावनहारी ऐसी जो वह कन्या है ताको दान कियो ता पीछे व्याह करिकै राजाने पुत्रहू उनके अर्थ निवेदन कियो ॥ ६८ ॥ और दासदासी मोतीनके गहने और कुंडल तथा

एवमुक्तस्ततस्तेनतथैवहिचकारसः ॥ आनीताचतदाकन्यासपुत्रारथसंस्थिता ॥ ६७ ॥ दत्ताकन्यातदाराज्ञा प्रोत्फुल्लाभक्तिवर्द्धिनी ॥ विवाह्यचततोराज्ञापुत्रस्तस्मैनिवेदितः ॥ ६८ ॥ दासान्दासीर्धनंधान्यंमुक्ताभरण कुण्डले ॥ हारग्रैवेयकेयूरान्नानामाणिक्यसंयुतान् ॥ ६९ ॥ रथान्गजान्हयान्वस्त्रमहिषीगोधनानिच ॥ राजारघुरदात्सर्वंदुहित्रेस्नेहसंयुतः ॥ ७० ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ ततोव्रजन्वनंविप्रोराजानंविनयान्वितम् ॥ धनंनानाविधंदृष्ट्वामुनिर्वचनमब्रवीत् ॥ ७१ ॥

हार गूलूबंद और वाजूवंद जिनमें नानाप्रकारकी मणी जडी भई हैं ये सव उन ऋषिको देतभये ॥ ६९ ॥ और रथ, हाथी, घोडे, वस्त्र, भैंसे और गऊनके समूह इन सव वस्तुनको राजा रघु अति प्रीतियुक्त हो वा चंद्रवती कन्याको देत भये ॥ ७० ॥ वैशंपायन वोले ॥ ता पीछे वनको जाते भये वे उद्दालक द्विज नानाप्रकारके धन देखिकै नम्रतायुक्त जो राजा है तासों वचन

बोलत भये ॥७१॥ हे सुव्रत! राजा या बहुतसे धनको मैं कहा करौं यह सब भांति आपहीके घरमें रहै ॥ ७२ ॥ ऐसे कहिकै सब राज्य राजाको देकै तपोवनको जात भये और स्त्रीपुत्र समेत अपने आश्रममें प्रवेश करत भये ॥ ७३ ॥ ता पीछे उद्दालक मुनि वा चंद्रवतीके साथ विहार करत भये और बडो भक्त नासिकेतनाम पुत्र गंगाके तीरमें सुखसों रहत भयो ॥ ७४ ॥ और मित्र जे बालक हैं तिनके साथमें आनंदसों विहार करत भयो एकवार क्रोध करिकै पिता वा अपने पुत्रको शाप देत भये ता पीछे संयमनी जो यम

किंकरोम्यहमेतेनधनेनविपुलेनच ॥ तवैवसर्वथाराजनगृहेतिष्ठतुसुव्रत ॥ ७२ ॥ इत्युक्त्वाराज्यमखिलंप्रतार्यागा त्तपोवनम् ॥ प्रविष्टःस्वाश्रमेविप्रःसपुत्रःसकलत्रकः ॥ ७३ ॥ रेमेतयाचंद्रवत्याततउद्दालकोमुनिः ॥ नासिकेतः सुतोभक्तोगंगातीरेसुखान्वितः ॥ ७४ ॥ विजहारमुदायुक्तोवयस्यैर्बालकैर्वृतः ॥ एकदातंनिजंपुत्रंशशापचपिता रुषा ॥ ततःसंयमनींगत्वातथैवपुनराययौ ॥७५॥ इतिहासकथांरम्यांपुण्यांपौराणिकींशुभाम् ॥ कथयेच्छृणुया द्यश्चसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ ७६ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेचंद्रवतीविवाहवर्णनंनामचतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

राजकी पुरी है तामें जायकै वैसेही फिर वह आवत भयो॥७५॥ पुराण स्थित रम्य और पवित्र इस इतिहास कथाको कहै और जो सुने वह सब पापनते छूटि जाय ॥ ७६ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां चंद्रवतीविवाहोनाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

॥ जनमेजय बोले ॥ हे विप्र ! मैं तुमसों यह पूँछोंहों आप मेरे संदेहको दूरि करो हे तपोनिधि ! लोकमें पुत्रको नामहू मनुष्यनको दुर्लभ है ॥ १ ॥ हे सुव्रत ! उद्दालक ऋषि काहेके लिये पुत्रको शाप देतभये और वह कैसे यमकी पुरीको गयो और फिर कैसे आय गयो ॥ २ ॥ वैशंपायन बोले ॥ हे राजा ! पहलेको वृत्तांत जैसे शाप दियो गयो और जैसे प्रसन्न नासिकेत पिता करिकै यम

जनमेजय उवाच ॥ एतत्पृच्छाम्यहंविप्रसंशयंमेह्यपानुद ॥ दुर्लभंपुत्रनामापिमनुष्याणांतपोनिधे ॥ १॥ कि मर्थंदत्तवान्शापंपुत्रमुद्दिश्यसुव्रत ॥ कथंयमपुरींप्राप्तःकथंचागतवान्पुनः ॥ २ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ शृणुराजन्पुरावृत्तंयथाशापोनियोजितः ॥ पित्रावैप्रेषितोगत्वाहर्षितोयमसादने ॥ ३ ॥ आगतःपुनरेवाथतत्स र्वंकथयामिते ॥ उद्दालकोमुनिवरःसुव्रतंपुत्रमेकदा ॥ ४ ॥ उवाचपुत्रगच्छेतिवनंशीघ्रंसमानय ॥ समित्कु शफलानीतिह्यग्निहोत्रंयथाभवेत् ॥ ५ ॥ इतिश्रुत्वापितुर्वाक्यंनासिकेतोवनंप्रति ॥ जगामतत्रसमुनिर्यत्रा स्तेशोभनंसरः ॥ ६ ॥

के लोकको पठाये गये ॥ ३ ॥ और फिर कर आगये सो सब तुमसों कहोंगो एकबार मुनिवर उद्दालक सुव्रत पुत्रसों कहत भये ॥ ४ ॥ कि, हे पुत्र ! वनको जाओ और समिधैं कुशा तथा पत्ते शीघ्रही लाओ जासों अग्निहोत्र होय ॥ ५ ॥ यह पिताको वचन सुनिकैं

नासिकेत मुनि वहाँ जातभये जहाँ एक सुंदर सरोवर हो ॥ ६ ॥ नानाप्रकारके वृक्ष लतान भरे भये और फलमूलनसों युक्त तथा नानाप्रकारके पक्षीन करि सेवन कियो गयो ऐसे वनको देखतभयो ॥ ७ ॥ नानाप्रकारके कमलनसों शोभायमान जो सुंदर सरोवर है तामें विधिपूर्वक स्नान आदि कर्म करत भयो ॥ ८ ॥ और वहाँ नासिकेतने सुंदर दिव्यकमलनसों देवतानको पूजन कियो और देवता तथा पितरनको तर्पण करिकै फलमूल आदिकी नैवेद्य करी ॥ ९ ॥ और धारणा तथा ध्यानकर्मसों वहाँई यो

दृष्ट्वारण्यंशुभंरम्यंनानाद्रुमलताकुलम् ॥ फलमूलयुतं चैवनानापक्षिनिषेवितम् ॥ ७ ॥ शुभेसरोवरेतत्रविविधोत्पलमण्डिते ॥ स्नानंकृत्वातुतत्रैवविधिदृष्टेनकर्मणा ॥ ८ ॥ देवार्चनंकृतंतेनदिव्यपुष्पैश्चनीरजैः ॥ नैवेद्यफलमूलाद्यैर्देवतापितृतर्पणैः ॥ ९ ॥ योगमारभ्यतत्रैवधारणाध्यानकर्मणा ॥ देवार्चनंचयोगंचनित्यं संपाद्ययत्नतः ॥ १० ॥ पितुर्मेविघ्नमुत्पन्नमग्निहोत्रेतुमत्कृतम् ॥ इतिनिश्चित्यमनसापितुराश्रममागमत् ॥ ॥ ११ ॥ततउद्दालकःक्रुद्धोदृष्ट्वापुत्रं चिरागतम् ॥ उवाचक्रोधताम्राक्षोह्यग्निहोत्रविघातकम् ॥ १२ ॥

गको आरंभ करि देवतानको पूजन और योगको जतनसों सदा करतो ॥ १० ॥ और शोचन लगो कि, मेरे पिताके अग्निहोत्रमें मेरो कियो भयो विघ्न उत्पन्न भयो है ऐसे मनमें निश्चय करिकै पिताके आश्रमको आवत भयो ॥ ११ ॥ ता पीछे उद्दालक मुनि देरमें आये भये पुत्रको देखि क्रोधसों लाल हैं नेत्र जिनके ऐसे हो अग्निहोत्रमें विघ्न करनहारे वा पुत्रसों बोलत भये ॥ १२ ॥

दूसरे वनमें फलमूल आदि लेने जायकै बहुत देरलौं काहेको ठहरो रे मंदभाग्य! तैंने हमारे अग्निहोत्रमें विघ्न कियो ॥ १३ ॥ अग्निहोत्रसों ब्रह्मा आदि देवतानके गण तृप्त होय हैं तैसे पितृगणहू सब तृप्त होय हैं उनको तैंने विघ्न कीन्हो ॥ १४ ॥ पिताके वा वचनको सुनिकै वह तपस्वी फिर बोलत भयो ॥ १५ ॥ कि, हे तात! यह अग्निहोत्र संसारका बंधन है और संसारमें परेभये जीव

किंतत्रफलमूलार्थंचिरंगत्वावनांतरे ॥ स्थितंत्वयामंदभाग्ययज्ञेविघ्नःकृतोमम ॥ १३ ॥ अग्निहोत्रेणतृप्यंतिब्रह्माद्यादेवतागणाः ॥ तथापितृगणाःसर्वेतेषांविघ्नःकृतस्त्वया ॥ १४ ॥ पितुस्तद्वचनंश्रुत्वाप्रत्युवाचसतापसः ॥ अग्निहोत्रमिदंतातसंसारस्यतुबन्धनम् ॥ १५ ॥ जन्ममृत्युमहामोहाःसंसारेपततांध्रुवम् ॥ योगाभ्यासात्परंनास्तिसंसारार्णवतारणम् ॥ १६ ॥ ब्रह्माद्यादेवताःसर्वेइंद्राद्याःकश्यपात्मजाः ॥ सर्वेयोगवशात्सिद्धागतास्तेपरमांगतिम् ॥ १७ ॥ ॥ उद्दालकउवाच ॥ ॥ सर्वाश्रमेषुभोःपुत्रयेचान्येतपसिस्थिताः ॥ अग्निहोत्रमुपासंतेस्वर्गलोकायसुव्रत ॥ १८ ॥

नको जन्म मृत्यु और महामोह निश्चय होय है ॥ १६ ॥ योगाभ्यासते परे संसारसमुद्रते पार करनहारे और कुछ नहीं है ब्रह्मा आदिक सब देवता और इंद्र आदिक सब कश्यपके पुत्र ये सब योगके वशसों सिद्ध भये और वे परम गतिको प्राप्त भये ॥ १७ ॥ उद्दालक बोले ॥ हे पुत्र! सब आश्रमनमें स्थित तथा जे कोई तपमें स्थितहैं हे सुव्रत! वे सब स्वर्गलोकके लिये अग्निहोत्रकी उपा

सना करैं हैं ॥ १८ ॥ नासिकेत बोले ॥ स्वर्गमें जायकै संसारमें निश्चय करिकै फिर जन्म होयहै योगाभ्याससे परे कुछ नहीं है और न भयो न होयगो ॥ १९ ॥ हे प्रभो ! अग्निहोत्र न करनो चाहिये योगाभ्यास करौ ॥ २० ॥ वैशंपायन बोले ॥ उद्दालक वाको सुनिकै अपने पुत्रपर क्रोधित होत भये और बोले कि, हे अधम पुत्र ! तू शीघ्र जा और यमराजको देख ॥ २१ ॥ तापीछे या

नासिकेत उवाच ॥ ॥ स्वर्गंगत्वापुनर्जन्मसंसारेभवतिध्रुवम् ॥ योगाभ्यासात्परंनास्तिनभूतंनभविष्यति ॥ १९ ॥ नकार्यमग्निहोत्रंतुयोगाभ्यासंकुरुप्रभो ॥ २० ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ उद्दालकस्तुतच्छ्रुत्वाक्रुद्धःसंस्तनयंप्रति ॥ उवाचगच्छशीघ्रंत्वंयमंपश्यसुताधम ॥ २१ ॥ ततः शापेनरौद्रेणपतितोधरणीतले ॥ प्रमाणमितिप्रत्युक्त्वानासिकेतोमहात्मवान् ॥ २२ ॥ वैवस्वतस्थितिर्यत्रपश्याम्येवतवाज्ञया ॥ पतितंपुत्रकंदृष्ट्वाऋषिर्जातोतिविह्वलः ॥ २३ ॥ महाशोकेनसंतप्तोविललापातिदुःखितः ॥ हापुत्रहावरशिशोहाज्ञानिन्हासुबुद्धिमन् ॥ २४ ॥

भयानक शापसों पृथिवीमें गिरत भयो और प्रमाणहै अर्थात् मैंने आपको शाप अंगीकार कियो ऐसे वह महात्मा नासिकेत प्रत्युत्तर देत भयो ॥ २२ ॥ हे महाराज ! जहां वैवस्वत कहिये सूर्यके पुत्र यमकी स्थितिहै वाको मैं आपकी आज्ञासों देखोंगो तव पुत्रको पतित देखिकै ऋषि बहुतही व्याकुल होतभये ॥ २३ ॥ बडे शोकसों संतप्तहो बहुतही विलाप करत भये और हा

पुत्र ! हा श्रेष्ठ शिशु ! हा ज्ञानी ! हा अच्छी बुद्धीवाले ! ॥ २४ ॥ मैं पापीहौं दुराचारीहौं क्रोधीहौं और ब्राह्मणमें अधमहौं जहां वैवस्वतराजाहैं और दारुण नरकहैं ॥ २५ ॥ वहां तुमको न जानो चाहिये प्रायश्चित्तको विचार करौ या प्रकार विलाप करते भये मुनिसों पुत्र फिर बोलत भयो ॥ २६ ॥ जाते मेरो तुम्हारो नमस्कार है हे अनघ ! जो वचन तुमने कहो वाको मैं सत्य करौंगो

अहंपापीदुराचारीअहंक्रोधीद्विजाधमः ॥ यत्रवैवस्वतोराजा दारुणानरकास्तथा ॥ २५ ॥ तत्रत्वयानगंतव्यंप्रायश्चित्तंविमर्शय ॥ एवंविलप्यमानंतंपुत्रःपुनरभाषत ॥ २६ ॥ यतस्तेमेनमस्कारोयत्त्वयोक्तंवचोनघ ॥ तत्सत्यंचकरिष्यामिनान्यथास्यात्कदाचन ॥ २७ ॥ आज्ञांतवकरिष्यामिमैवंवदमहामते ॥ सत्येनतपतेसूर्यःसत्येनपृथिवीस्थिता ॥ २८ ॥ सत्येनज्वलतेवह्निःसर्वंसत्येप्रतिष्ठितम् ॥ अश्वमेधसहस्रंवैसत्येनतुलयेन्नहि ॥ २९ ॥ सत्येनगम्यतेस्वर्गःसत्येनपरमांगतिम् ॥ सत्यधर्मविहीनस्यनरकेपतनंध्रुवम् ॥ ३० ॥

कबहूँ अन्यथा न होयगो ॥ २७ ॥ मैं आपकी आज्ञा करौंगो हे महामति ! ऐसे मति कहौ सत्यसों सूर्य तपैहै और सत्यसों पृथिवी स्थितहै ॥ २८ ॥ सत्यसों अग्नि जलै है सब सत्यहीमें प्रतिष्ठितहै हजार अश्वमेध यज्ञहू सत्यके साथ नहीं तुलैहै ॥ २९ ॥ सत्यसों स्वर्गमें जाय हैं और सत्यसों परमगति कहिये मोक्ष होय है और जो धर्मसों विहीन है वाको निश्चय नरकमें पतन

होयहै ॥ ३० ॥ ताते सब यत्ननसों शोकको त्याग करिकै स्थिर होजाओ ॥ ३१ ॥ शीघ्रही यमके पुरको और धर्मराजके मंदिरको देखि शीघ्रही आपके चरणनमें आऊँगो ॥ ३२ ॥ वैशंपायन बोले ॥ पहले पिताके चरणको नमस्कार करि फिरि स्वयंभू जे ब्रह्माहैं तिनको प्रणाम करि विनीत है आत्मा जाको ऐसो नासिकेत क्षणहीमें अंतर्धान होजातभयो ॥ ३३ ॥ सब जतनसों पिताके

तस्मात्सर्वप्रयत्नेनशोकंत्यक्त्वास्थिरोभव ॥३१॥ दृष्ट्वायमपुरंसद्योधर्मराजस्यमंदिरम् ॥ शीघ्रंचैवागमिष्यामि तवपादसमीपतः ॥ ३२ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ पितृपादौप्रणम्यादौनमस्कृत्वास्वयंभुवे ॥ नासिकेतोविनीता त्माक्षणेनांतरधीयत ॥३३॥ तस्यसर्वप्रयत्नेनशापमेवप्रलापयन् ॥ संप्राप्तोवायुवेगेनयत्रराजास्वयंयमः ॥३४॥ ददर्शधर्मराजानंज्वलंतमिवपावकम् ॥ सिंहासनसमारूढंसूर्यपुत्रंमहाबलम् ॥३५॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्या नेयमदर्शनंनामपंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

शापको सत्य करतो भयो वह नासिकेत पवनके वेगसों जहाँ यमराज है वहाँ प्राप्त होत भयो ॥ ३४ ॥ और अग्निके समान प्रकाश मान सिंहासनपर बैठेभये ऐसे महाबली सूर्यके पुत्र जे यमराजहैं तिनको देखत भयो ॥ ३५ ॥ इतिश्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडित केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां यमदर्शनो नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

वैशंपायन बोले ॥ विद्या और विनयसों भूषित वह नासिकेत यमकी सभामें जात भयो फिर वाने सुंदर यमके स्तोत्रको आरंभ कियो ॥ १ ॥ नासिकेत बोलो ॥ तीनो लोकके पितामह जे आप धर्मराजहैं तिनको नमस्कारहै और तीनो लोकनके रक्षा करनहारे और सबके हितकारी जे आपहैं तिनको नमस्कारहै ॥ २ ॥ सूर्यके पुत्र दिव्य देह और अमितहै तेज जिनको ऐ

॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ प्रविष्टस्तुसभामध्येविद्याविनयभूषितः ॥ तेनस्तोत्रंसमारब्धंधर्मराजस्यशोभनम् ॥ १ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ नमस्तेधर्मराजाय त्रैलोक्यस्यपितामह ॥ सर्वलोकस्यसंगोप्त्रेनमः सर्वहितायच ॥ २ ॥ मार्तण्डसूनवेदिव्यदेहायामिततेजसे ॥ नमस्तेरविभक्तायनिर्मलायचतेनमः ॥ ३ ॥ सुप्रभाढ्यस्वरूपायनमस्तेसुरपूजित ॥ धर्माधिकारिणेश्रीमन्नमस्तेबहुरूपिणे ॥ ४ ॥ नमोधर्मायमहतेनमः पापांतकायच ॥ ज्ञानविज्ञानरूपायधर्ममूर्तेनमोस्तुते ॥ ५ ॥

से जे आपहैं तिनको नमस्कारहै और हे धर्मराज ! रविके भक्त निर्मल रूप जे आपहैं तिनको नमस्कारहै ॥ ३ ॥ सुंदर कांति करिकै युक्तहैं स्वरूप जिनको और देवतानकरिकै पूजित जे आपहैं तिनको नमस्कारहै और धर्मके अधिकारी तथा बहुत रूप धारण करनहारे जे श्रीमान् आपहैं तिनको नमस्कारहै ॥४॥ बडे धर्मरूप और पापके नाश करनहारे जे आपहैं तिनको नमस्कार है

और ज्ञान विज्ञानरूप धर्ममूर्ति जे आपहैं तिनको नमस्कारहै ॥५॥ वैशंपायन बोले ॥ कि नासिकेतको कियो भयो स्तोत्र प्रत्यक्ष पापको नाश करनहारोहै जो सावधानहोकै धर्मराजके कीर्तनको भली भाँति पढैहै ॥ ६ ॥ वाके आधि कहिये मानसी व्यथा और काय जो शरीरहै तामें रोगको भय नहीं है और वाके ऊपर यमराज संतुष्ट होयहैं और वह नरकको नहीं देखैहै ॥ ७ ॥ विप्रकरिकहें

॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ नासिकेतकृतंस्तोत्रंप्रत्यक्षंपापनाशनम् ॥ यःपठेत्प्रयतःसम्यग्धर्मराजस्य कीर्तनम् ॥ ६ ॥ नैवतस्यभवेदाधिःकायेरोगभयंनहि ॥ यमस्तुष्टोभवेत्तस्यनरकांश्चनपश्यति ॥ ७ ॥ श्रुत्वाविप्रेरितंस्तोत्रंधर्मराजोवचोब्रवीत् ॥ तुष्टोहंतवविप्रेंद्रब्रूह्यागमनकारणम् ॥ ८ ॥ नासिकेत उवाच ॥ पित्राक्रुद्धेनशप्तोहंयमंपश्येतिभानुज ॥ तदाज्ञयात्रसंप्राप्तोयोगमार्गेणवेगतः ॥ ९ ॥ ॥ यम उवाच ॥ किंपृच्छसिमहाप्राज्ञविचारययथासुखम् ॥ वरंब्रूहिप्रयच्छामियत्तेमनसिवर्तते ॥ १० ॥

भये या स्तोत्रको सुनिकै धर्मराज वचन बोलत भये हे विप्र ! मैं तुम्हारे ऊपर प्रसन्नहौं अपने आवनेको कारण कहौ ॥ ८ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे सूर्यपुत्र ! पिताने क्रोधितहोकै यह शाप दियोहै कि, तू यमको देख सो मैं उनकी आज्ञासों यहां योगमार्गकरि वेगसों आयोहौं ॥ ९ ॥ यम बोले ॥ कि हे महाप्राज्ञ ! तुम कहा पूछोहो वाको सुखसों विचार करौ और जो तुम्हारे मनमें होय

सो वर मांगो मैं देऊँगो ॥ १० ॥ नासिकेत बोले ॥ कि हे देव ! जो तुम मोपर प्रसन्नहौ तौ मोको यह वरदेउ कि, तुम्हारी सव पुरीको देखौं और चित्रगुप्त लेखकहूको देखौं ॥ ११ ॥ और जहां पापी दुःखपावैहैं तथा पुण्यात्मा सुख पावैहैं यह सब मैं देखो चाहौंहौं हे सूर्यके पुत्र ! मोपै प्रसन्न होउ ॥ १२ ॥ वैशंपायन बोले ॥ तब यमराज अपने सेवकनको बुलायके कहतभये कि, सत्यव्रतमें

॥ नासिकेत उवाच ॥ यदितुष्टोसिमेदेववरेमेनंप्रयच्छमे ॥ पश्यामितेपुरींसर्वांचित्रगुप्तंचलेखकम् ॥ ११ ॥ दुष्कृतीपच्यतेयत्रसुकृतीसुखमेधते ॥ एतदिच्छामिसंद्रष्टुंप्रसादंकुरुसूर्यज ॥ १२ ॥ वैशंपायनउवाच ॥ ॥ किंकरांस्तत्रचाहूयधर्मराजेनभाषितम् ॥ एनंविप्रंमहाप्राज्ञंसत्यव्रतपरायणम् ॥ १३ ॥ पितुःशापादिहायातं दर्शयंतुपुरींमम ॥ १४ ॥ तदातेकिंकराःसर्वेचित्रगुप्तस्यवेश्मनि ॥ गत्वातदैवसहितानासिकेतेनभारत ॥ चित्रगुप्तस्यतेसर्वेद्वारपालमथाब्रुवन् ॥ १५ ॥ यमेनप्रेषितोविप्रोनासिकेतोमहात्मवान् ॥ वचनंचास्यश्रोतव्यं दर्शयध्वंपुरंमहत् ॥ १६ ॥

परायण या वडे पंडित ब्राह्मणको तुम लेजाउ ॥ १३ ॥ और पिताके शापसों यहां आयेभये याको मेरी पुरी दिखाओ ॥ १४ ॥ तब वे सब किंकर चित्रगुप्तके घरमें हे भारत ! नासिकेत समेत जायकै वे सब चित्रगुप्तके द्वारपालनसों कहत भये ॥ १५ ॥ कि, यह महात्मा नासिकेत ब्राह्मण यम करिकै पठायो गयोहै सो याको वचन सुनिये और यह बडो पुर याहि दिखाइये ॥ १६ ॥

यह दूतको वचन सुनिकै द्वारपाल बोलत भयो और धर्मराजके लेखक चित्रगुप्तको नमस्कार करिकै कहत भयो ॥१७॥ हे देव! वचन सुनिये यम करिकै पठयो गयो ब्राह्मण यमके दूतनसमेत आपके द्वार पै स्थिहै ॥ १८ ॥ चित्रगुप्त बोले ॥ कि हे दूतो ! वा ब्राह्मणको बहुत शीघ्र मेरे समीप लाओ ॥ १९ ॥ चित्रगुप्तको वचन सुनिकै वह उन सबनको लावत भयो और चित्रगुप्त उनसों

इतिदूतवचःश्रुत्वाद्वारपालोऽब्रवीद्वचः ॥ चित्रगुप्तंनमस्कृत्यधर्मराजस्यलेखकम् ॥ १७ ॥ वचनंश्रूयतांदेवयमेनप्रेषितोद्विजः ॥ सहितोयमदूतैश्चद्वारेतिष्ठतितेऽनघ ॥ १८ ॥ चित्रगुप्त उवाच ॥ ॥ विप्रंतुत्वरितंदूतसमानयममांतिकम् ॥ १९ ॥ चित्रगुप्तवचःश्रुत्वासोपिसर्वान्समानयत् ॥ उवाचचित्रगुप्तस्तान्किंकार्यंब्रूतसुव्रताः ॥ २० ॥ ॥ दूताऊचुः ॥ ॥ प्रेषिताःस्मोमहाभागधर्मराजेनधीमता ॥ तेनाज्ञप्तंमहाप्राज्ञतत्कुरुष्वाविलंबितम् ॥ २१ ॥ योयंविप्रोमहाप्राज्ञःसत्यधर्मपरायणः ॥ पितुःशापाच्चयोगेनप्राप्तोवैवस्वतेपुरे ॥ अस्यवांछाप्रकर्तव्यायद्यदिच्छतिवैद्विजः ॥ २२ ॥

बोलतभये कि, हे सुव्रतौ ! कहा कामहै सो कहो ॥ २० ॥ दूत बोले ॥ हे महाराज ! हम महाभाग बुद्धिमान् धर्मराज करि पठाये गयेहैं ताते हे माहाप्राज्ञ ! उनने जो आज्ञा दीन्हीहै वाको तुम शीघ्र करौ ॥ २१ ॥ वडो पंडित और सत्यधर्ममें परायण जो यह ब्राह्मणहै सो पिताके शापके योगसों यमपुरमें प्राप्त भयो है, सो यह जोजो वांछा करै सोसो करने योग्यहै ॥ २२ ॥

चित्रगुप्त बोले कि, हे महाप्राज्ञ ! विप्र जो तुम चाहौहौ सो कहौ हे द्विजश्रेष्ठ! धर्मराजकी आज्ञा मोको प्रमाणहै ॥ २३ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे वडे पराक्रमी! हे वडे तेजस्वी ! हे धर्म अधर्मके विचार करनहारे ! तुम सब भूतनके शुभ अशुभ कर्मनको जानौ हौ ॥ २४ ॥ वैशंपायन बोले ॥ ऐसे संतुष्ट करेगये महात्मा चित्रगुप्त वा ब्राह्मणके वचनसों प्रसन्नहो वासों फिरि बोलत भये ॥ २५ ॥

॥ चित्रगुप्त उवाच ॥ ॥ ब्रूहिविप्रमहाप्राज्ञयत्त्वमिच्छसितद्वद ॥ धर्मराजस्यआज्ञामेप्रमाणंद्विजसत्तम ॥ ॥ २३ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ महावीर्यमहातेजोधर्माधर्मविचारक ॥ त्वंचित्रंसर्वभूतानांसर्ववेत्सि शुभाशुभम् ॥ ॥ २४ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ एवंचतोषितस्तेनचित्रगुप्तोमहात्मवान् ॥ हर्षितोद्विजवाक्येनपुनरेवाब्रवीद्विजम् ॥ २५ ॥ ज्ञानंविज्ञानसंयुक्ततुष्टोहंतेद्विजोत्तम ॥ ददामित्वांवरंशीघ्रंयत्तेमनसिवर्तते ॥ २६ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ पश्यामिवःपुरींसर्वांदुःखानिचसुखानिच ॥ एतच्छ्रुत्वावचोभूयश्चित्रगुप्तोवचोब्रवीत् ॥ २७ ॥

हे ज्ञानविज्ञानसों युक्त द्विजोत्तम ! मैं तुमसों प्रसन्नहौं और जो तुम्हारे मनमें है सो वर मैं तुमको देउहौं ॥ २६ ॥ नासिकेत बोले ॥ मैं तुम्हारी सब पुरीको देखौं और दुःख तथा सुखनको देखौं या वचनको सुनिकै चित्रगुप्त फिरि वचन बोलत भये ॥ २७ ॥

हे दूतो ! मेरे वचनसों तुम या श्रेष्ठ ब्राह्मणको विषम तथा शुभ सब मेरो बडो पुर शीघ्र दिखाओ ॥ २८ ॥ जैसे यह विप्र नरक न करिकै और व्याधिन करिकै पीडित न होय ऐसे या विप्रेंद्रको सब दिखाकै फिरि यहाँ ले आओ ॥ २९ ॥ चित्रगुप्त करिकै आज्ञादिये गये बहुत शीघ्र चलन हारे दूतनने धर्मराजकी आज्ञासों बडी वह सब पुरी नासिकेतको दिखाई ॥ ३० ॥

भोदूताममवाक्येनसत्वरंद्विजपुंगवम् ॥ विषमंचशुभंसर्वंदर्शयंतुपुरंमहत् ॥ २८ ॥ यथानपीड्यतेविप्रोन रकैश्चैवव्याधिभिः ॥ दर्शयित्वाचविप्रेंद्रंपुनरत्रानयंतुच ॥ २९ ॥ चित्रगुप्ताज्ञयासर्वैर्दूतैस्त्वरितगामिभिः ॥ दर्शयित्वापुरींसर्वांपृथुलांधर्मशासनात् ॥ ३० ॥ आनीतंपुरतस्तस्यचित्रगुप्तस्यवेश्मनि ॥ ॥ चित्रगुप्त उवाच ॥ ॥ नीयतांवैद्विजःशीघ्रंधर्मराजस्यसन्निधौ ॥ ३१ ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ ॥ तंप्रणम्यगत स्तत्रयत्रवैवस्वतःस्थितः ॥ यमश्चाप्यागतंदृष्ट्वानासिकेतंमहत्तमम् ॥ ३२ ॥ अर्घ्यपाद्यासनैरेनंनासिकेत मपूजयत् ॥ सुखासीनस्यविप्रस्ययमोवचनमब्रवीत् ॥ ३३ ॥

और फिरि उनको चित्रगुप्तके घरको लावत भये ॥ चित्रगुप्त बोले ॥ या ब्राह्मणको शीघ्रही धर्मराजके समीप ले जाओ ॥ ३१ ॥ वैशंपायन बोले ॥ चित्रगुप्तको प्रणाम करिकै जहाँ वैवस्वत है वहाँ जात भये और यम हूँ अति श्रेष्ठ नासिकेतको आयो भयो देखि ॥ ३२ ॥ अर्घ्य पाद्य और आसन आदिसों नासिकेतको पूजन करत भये फिरि सुख

सों वैठभये वा ब्राह्मणसों यमराज वचन वोलत भये ॥ ३३ ॥ हे नासिकेत महाभाग ! तुम नाना प्रकारके स्थान और चित्र गुप्त लेखकको देखिके सुखसों आये ?॥ ३४ ॥ नासिकेत बोले ॥ कि तुम्हारे प्रसादसों मैंने स्वर्ग और नरक देखो मेरे पिता मेरे मोहसों मोहितहो दुःखसों घोर वनमें स्थितहैं ॥ ३५ ॥ हे स्वामी ! जो आज्ञा होय तौ मैं उनके चरण जायकें देखो ॥ यम वोले

नासिकेतमहाभागह्यागतस्त्वंसुखेनच ॥ दृष्टार्चंविविधंस्थानंचित्रगुप्तंचलेखकम् ॥ ३४ ॥ नासिकेत उवाच ॥ त्वत्प्रसादान्मयादृष्टःस्वर्गश्चनरकस्तथा ॥ पितामेदुःखतोघोरेवनेतिष्ठतिमोहितः ॥ ३५ ॥ तस्यपादौ प्रपश्यामिस्वामिन्नाज्ञाभवेद्यदि ॥ ॥ यम उवाच ॥ ॥ गच्छद्विजवरश्रेष्ठयत्रातिष्ठतितेपिता ॥ ३६ ॥ अजरश्चामरश्चैवसर्वदोषविवर्जितः ॥ भवत्वमक्षयोविप्रतपोयोगबलान्वितः ॥ ३७ ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ एवमुक्तोनमस्कृत्यधर्मराजंद्विजोत्तमः ॥ गतोसौयेनमार्गेणतेनैवपुनरागतः ॥ ३८ ॥

हे द्विजवरनमें श्रेष्ठ ! जहाँ तुम्हारे पिता हैं वहाँ जाओ ॥ ३६ ॥ हे विप्र ! तप और योगबलसों युक्त तुम अजर अमर और सब दोषन करिकै रहित होउ ॥ ३७ ॥ वैशंपायन बोले ऐसे कहेगये वे द्विजोत्तम धर्मराजको नमस्कार करि जा मार्ग

सों गये हैं वाही मार्गसों फिरि आय जात भये ॥ ३८ ॥ आधेही पलमें जहाँ पिता है वहाँ आय जात भये तब उद्दालक आये भये महात्मा पुत्रको देखि चरणनमें नमत भये वाको छातीसों लगायकै बोलत भये ॥ ३९ ॥ उद्दालक बोले ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो और आज मेरी क्रिया सफल भई और पुत्रको जो दर्शन भयो ताते आज मेरो सब सफल भयो ॥ ४० ॥ मैं

यत्रस्थितःपितातत्रसंप्राप्तोनिमिषार्द्धतः ॥ उद्दालकोमहात्मानंदृष्ट्वापुत्रंसमागतम् ॥ उवाचतंपरिष्वज्यन मंतंपादयोर्मुहुः ॥ ३९ ॥ ॥ उद्दालक उवाच ॥ ॥ अद्यमेसफलंजन्मअद्यमेसफलाःक्रियाः ॥ अद्यमेसफ लंसर्वंयज्जातंपुत्रदर्शनम् ॥ ४० ॥ अहंक्रोधीदुराचारीनिर्दयःपापकर्मकृत् ॥ विनापराधंपुत्रेतुमयाशा पोनियोजितः ॥ ४१ ॥ दृष्ट्वापुत्रंसमायातंमाताप्रोवाचहर्षिता ॥ ४२ ॥ पश्यपश्यप्रभावंवैमत्पुत्रस्यसु शोभन ॥ शीघ्रंचैवयमंदृष्ट्वाआगतोयमसादनात् ॥ ४३ ॥ ॥ उद्दालक उवाच ॥ ॥ कथंयमपुरींप्राप्तः कथंशीघ्रमिहागतः ॥ कीदृशोयमलोकस्यपंथाश्चैवयमस्तथा ॥ ४४ ॥

क्रोधी दुराचारी निर्दयी और पाप कर्मनको करन हारो हौं विना अपराधके मैंने पुत्रको शाप दियो ॥ ४१ ॥ पुत्रको आयो भयो देखि हर्षित होकै माता बोलत भई ॥ ४२ ॥ मेरे पुत्रको सुंदर प्रभाव देखौ जो यमको देखिकै यमके घरते शीघ्र यहाँ आय गयो ॥ ४३ ॥ उद्दालक बोले यमकी पुरीमें कैसे पहुँचो और कैसे शीघ्रही यहाँ आयगयो और यमलोकको मार्ग

कैसो है और यम कैसेहैं ॥ ४४ ॥ हे पुत्र ! तुमने भोजन और पान कैसे पायो तुमने जो कुछ वहाँ देखो होय सो सब हे पुत्र ! मो सों कहौ ॥ ४५ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे पिता ! मैं तुम्हारे प्रसादसों यमके लोकमें पहुँचो वहाँ नाना प्रकारके देवता देखे और भगवान् प्रभु यमहूँ देखे ॥ ४६ ॥ और सब लोकके अनुशासन करन हारे चित्रगुप्त मैंने देखे और धर्मराज देखे और मैंने

कथंलब्धंत्वयापुत्रभोजनंपानमेवच ॥ यत्किंचित्तत्रतेदृष्टंतत्सर्वंब्रूहिमेसुत ॥ ४५ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ त्वत्प्रसादादहंतातसंप्राप्तोयमसादनम् ॥ देवाश्चविविधादृष्टायमश्चभगवान्प्रभुः ॥ ४६ ॥ चित्रगुप्तोमयादृष्टः सर्वलोकानुशासनः ॥ दृष्टश्चधर्मराजोवैस्तुतिभिस्तोषितोमया ॥ तुष्टेनमेवरोदत्तोह्यजरश्चामरोभव ॥ ४७ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेषष्ठोऽध्यायः ॥६॥ वैशंपायन उवाच ॥ ऋषयश्चततः श्रुत्वासर्वेविस्मयमागताः ॥ यमस्यभवनंगत्वामुनिंपुनरिहागतम् ॥ १ ॥

स्तुति करिकै उनको संतुष्ट कियो तब संतुष्ट भये यमराजने मोको वरदियो कि, तू अजर अमरहो ॥ ४७ ॥ इतिश्रीमत्पंडित परमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥ वैशंपायन बोले ॥ ता पीछे सब ऋषि या उपाख्यानको सुनिकै विस्मयको प्राप्त होत भये कि, यमके भवनमें जायकै फिरि यहाँ कैसे आय गयो ॥ १ ॥

वासमय तप और व्रतनके करन हारे बहुतसे मुनीश्वर वा उद्दालक मुनिके आश्रममें पूँछिवेको आवत भये ॥ २ ॥ कोई पक्षके उपवास करनहारे हैं और कोई जलमें वास करन हारे और कोई नीचेको मुख राखन हारे हैं तथा कोई पवनको आहार करन हारे हैं ॥ ३ ॥ और जे अग्निको साधन हारे निराहार तपस्वी हैं वेऊ आवतभये ॥ ४ ॥ और बडो जो दारुण तप है ताके करवेको एक

आगताश्चाश्रमेतस्यमुनेरुद्दालकस्यच ॥ प्रश्नार्थंचसमायातास्तपोव्रतसमन्विताः ॥ २ ॥ पक्षोपवासिनःके चिद्येचान्येजलवासिनः ॥ अधोमुखास्तथैवान्येवायुभक्षास्तथापरे ॥ ३ ॥ येचाग्निसाधकाश्चान्येनिराहारा स्तपस्विनः ॥ ४ ॥ एकपादेनतिष्ठंतस्तपस्तप्त्वासुदारुणम् ॥ सन्यासिनोवनस्थाश्चमौनव्रतपरायणाः ॥ ५ ॥ जपयज्ञरताःकेचिदृषयश्चोग्रतेजसः ॥ योगाभ्यासरताःकेचित्तापसाब्रह्मचारिणः ॥ ६ ॥ शुष्कपर्णा शनाःकेचित्तथामासोपवासिनः ॥ पप्रच्छुर्मिलिताःसर्वेनासिकेतंमहामुनिम् ॥ ७ ॥

पाँवसों ठाढें रहत हैं वेऊ आवत भये और संन्यासी तथा वनवासी और मौन व्रतके धारन करन हारेहू आवत भये ॥ ५ ॥ और जप तथा यज्ञमें तत्पर बडो उग्रहै तेज जिनको ऐसे ऋषि और कोई योगाभ्यासमें लगेभये और कोई तपस्वी तथा ब्रह्म चारीहू आवत भये ॥ ६ ॥ कोई सूखे पत्तनके खानहारे और कोई एक महीनाको व्रत करनहारे ऐसे बहुतसे ऋषि आवत

भये और सब मिलिकै नासिकेत महा मुनीसों पूंछतभये ॥ ७ ॥ हे बडे पंडित उद्दालकके पुत्र ! तुमने जो अद्भुत देखो है ॥ ८ ॥ हे महाभाग नासिकेत ! परलोककी कथाको कहौ कि यमको लोक कैसोहै और वाको मार्ग कैसो है ॥ ९ ॥ और यमके दूत कैसेहैं वहांकी मर्यादा कहां है और हे द्विज ! वहाँके लोग कैसेहैं क्रोधीहैं अथवा मीठो वचन बोलै

उद्दालकात्मजप्राज्ञदृष्टंचैवत्वयाद्भुतम् ॥ ८ ॥ नासिकेतमहाभागपरलोककथांवद ॥ कीदृशोयमलोकश्च तस्यमार्गश्चकीदृशः ॥ ९ ॥ कीदृशायमदूताश्चकास्थितिर्वर्ततेद्विज ॥ कीदृशस्तत्रलोकश्चक्रोधीवाप्रिय वाग्द्विज ॥ १० ॥ कीदृशानरकास्तत्रकेनपापेनकोभवत् ॥ सत्यंब्रूहिमहाप्राज्ञऋषयःप्रष्टुमागताः ॥ ११ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ श्रूयतामृषयःसर्वेयेचान्येतपसिस्थिताः ॥ नमस्कृत्यमहादेवंधर्मराजंमहामतिम् ॥ तत्रदृष्टंप्रवक्ष्यामिमहांतंरोमहर्षणम् ॥ १२ ॥ पितुःशापादहंप्राप्तोविप्राःसंयमनींपुरीम् ॥ तत्रदृष्टोधर्मरा जःस्तुतिभिस्तोषितोमया ॥ १३ ॥

हैं ॥ १० ॥ और वहाँ नरक कैसेहैं और कौनसे पापते कौनसो नरक मिलैहै हे महाप्राज्ञ ! सत्य कहौ ऋषि पूँछिवेको आये हैं ॥ ११ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे सब ऋषियो ! सुनो और जे अन्य ऋषियो तपस्यामें बैठेहैं वेऊ सुनैं मैं महादेव धर्मराज जे महा मतिहैं उनको नमस्कार करिकै बडो रोमहर्ष करावनहारो जो वहां देखोहै ताहि कहौंगो ॥ १२ ॥ हे ब्राह्मणो ! पिताके शापसों

मैं संयमनी नाम जो यमराजकी पुरीहै तामें पहुँचत भयो वहां मैंने धर्मराज देखे और स्तुतिनसों उनको संतुष्ट करत भयो ॥ १३ ॥ और जब धर्मराज संतुष्ट भये तब मैंने उनसों कहो कि, अपनी पुरीको दिखाओ। हे ब्राह्मणो ! तब उनकी आज्ञा लेकै मैंने सब पुरी देखी ॥ १४ ॥ और शुभ अशुभके विचार करनहारे चित्रगुप्तहू मैंने देखे और विनययुक्त चित्त होकै मैंने वरहू पायो कि, तू अजर अमरहो और तेरे व्याधि तथा दुःख सब नाशको प्राप्त होयँ ॥ १५ ॥ और अपने पिताके प्रसाद ते फिरि यहां आय गयो

तुष्टेधर्मेमयाप्रोक्तंदर्शयस्वपुरींतव ॥ तदायमाज्ञयासर्वापुरीदृष्टामयाद्विजाः ॥ १४ ॥ चित्रगुप्तोमयादृष्टः शुभाशुभविचारकः ॥ ततोवरंमयालब्धंविनयाविष्टचेतसा ॥ अजरामरताचैवव्याधिदुःखविनाशनम् ॥ १५ ॥ आगतोहंपुनश्चैवपितुर्ममप्रसादतः ॥ पुनश्चाहंप्रवक्ष्यामियमलोकस्यविस्तृतिम् ॥ १६ ॥ शतानिदशविस्तीर्णं योजनानांप्रमाणतः ॥ चतुरस्रंचतुर्द्वारंनानारत्नोपशोभितम् ॥ १७ ॥ नानाजनसमाकीर्णंगीतवादित्रसंयुतम् ॥ धर्मराजपुरंदिव्यंसप्तप्राकारवेष्टितम् ॥ १८ ॥

और यमलोकको विस्तार फिरि मैं कहौंगो ॥ १६ ॥ कि वह प्रमाणमें एकहजार योजन चौडो लंबो है वाके चारि कोने हैं और चारि वाके द्वारहैं और नाना प्रकारके रत्नसों शोभितहै ॥ १७ ॥ और नाना प्रकारके जे जनहैं तिन करिके समाकीर्ण कहिये भरो भयोहै और जामें सदा गावनो बजावनो होयहै और सात परकोटानसों घिरोभयो वह दिव्य यमराजको पुरहै ॥ १८ ॥

वाके मध्यमें बहुतही सुंदर धर्मराजको मंदिरहै यह सब प्रकारके रत्ननसों बनोहै और बिजली तथा वाल सूर्यके समान चमकि रहो है ॥ १९ ॥ और चित्र विचित्र स्फटिकजो बिछौरहै ताकी सीढियां बनींहैं और हीरानकी कुटीनसों शोभितहै वामें भगवान् धर्मराज जाकी उपमा नहीं होसकैहै ऐसे सुंदर आसनपर विराजमान होयहैं ॥ २० ॥ सिंहासनपर बैठेभये सज्जननमें श्रेष्ठ जो यमराजहैं तिनकी

तस्यमध्येमहादिव्यंधर्मराजस्यमंदिरम् ॥ सर्वरत्नमयंवह्निविद्युद्बालार्कवर्चसम् ॥ १९ ॥ चित्रस्फाटिकसोपानंवज्रकुट्टिमशोभितम् ॥ तत्रासौभगवान्धर्मआसनेनुपमेशुभे ॥ २० ॥ उपविष्टःसतांश्रेष्ठःसिंहासनगतोयमः ॥ सभायांधर्मराजंतंयोगिनःसमुपासते ॥ २१ ॥ अप्सरोगणगंधर्वाविद्याधरमहोरगाः ॥ प्रविशंतींद्रदिग्द्वारेशिवभक्तिपरायणाः ॥ २२ ॥ ग्रीष्मोदकप्रदातारोमाघेवह्निप्रदायकाः ॥ विश्रामयंतियेश्रांतान्विप्रानध्वप्रपीडितान् ॥ २३ ॥ दानधर्मरताश्चैवक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ पितृभक्तिरतायेचगुरुपूजारताःसदा ॥ २४ ॥

सभामें उनकी उपासनाको बडे २ योगी आवैहैं ॥ २१ ॥ अप्सरानको गण गंधर्व विद्याधर और बडे २ सर्प तथा शिवकी भक्तिमें परायण ये सब पूर्व दिशाके द्वारमें प्रवेश करेहैं ॥ २२ ॥ गर्मीकी ऋतुमें जलके देनेहारे और माघ महीनामें आगिसों तपावन हारे और जे मार्ग चलनेसों पीडित थके भये ब्राह्मणनको विश्राम देयहैं ॥ २३ ॥ और जे दान तथा धर्ममें रतहैं और

क्रोध तथा लोभ करिकै रहितहैं और जे पिताकी भक्तिमें रत हैं तथा गुरुकी पूजामें सदा तत्परहैं ॥ २४ ॥ हे ब्राह्मणनमें उत्तम ! वे सब पूर्वके द्वारमें होकर प्रवेश करैं हैं और जे अभ्यागतनको पूजैंहैं और ब्राह्मणनको तथा देवतानको पूजैं हैं ॥ २५ ॥ और ब्राह्मणनके जे भक्त हैं और जे तीर्थनके स्नानमें तत्परहैं और काशीमें तथा गौके घरमें जे मरेहैं वे

पूर्वद्वारेणतेसर्वेप्रविशंतिद्विजोत्तमाः ॥ अतिथीपूजयेयुर्येदेवद्विजप्रपूजकाः ॥ २५ ॥ ब्राह्मणानांचयेभक्तास्तीर्थस्नानरताश्चये ॥ वाराणस्यांगोग्रहेचमृतास्तेयांतिचोत्तरे ॥ २६ ॥ सत्यव्रतधरायेचनित्यंधर्मपरायणाः ॥ परद्रव्येच्छाविहीनाःपरनिंदापराङ्मुखाः ॥ २७ ॥ विष्णुभक्तामहात्मानःपरस्त्रीषुनपुंसकाः ॥ नित्यंधर्मकथासक्ताःपरहिंसाविवर्जिताः ॥ २८ ॥ एतेवैपश्चिमेद्वारेप्रविशंतिसुखान्विताः ॥ अन्येचदक्षिणेद्वारेप्रविशंतिनराधमाः ॥ २९ ॥ सदानृतपराःक्रूरागुरुदेवविदूषकाः ॥ पुराणवेदमीमांसामातृपितृविनिंदकाः ॥ ३० ॥

उत्तरके द्वारमें होकै जाय हैं ॥ २६ ॥ और जे सत्यव्रतके धारण करनहारेहैं और नित्यही धर्ममें परायणहैं और जे पराये द्रव्यकी इच्छा रहितहैं और पराई निंदाते विमुखहैं ॥ २७ ॥ और जे महात्मा विष्णुके भक्त हैं और पराई स्त्रीनमें जे नपुंसकहैं और जे नित्य धर्मकी कथामें लगे रहैं हैं और जे पराई हिंसाते रहितहैं ॥ २८ ॥ ये सब निश्चय पश्चिमके द्वारमें होके सुखसों प्रवेश करैंहैं अन्य नीच मनुष्य दक्षिणके द्वारमें होकै भीतर धसैं हैं ॥ २९ ॥ जे सदा झूठ बोलैंहैं क्रूरहैं

और देवता तथा गुरुनको दूषण देय हैं तथा पुराण वेद मीमांसा और मातापिताके निंदक हैं ॥ ३० ॥ वा द्वारमें अति उग्र हाहाकार होयहै मैंने सुनो है और अतिघोर अंधकारमयी है और और नाना प्रकारके रोगनकरिकै सेवन कियो गयो है ॥ ३१ ॥ वहाँ पापी यमदूतनकरिकै पीडित होयहैं और मुद्गरनसों तथा दारुण लोहदंडनसों ताड़ना किये जायहैं ॥ ३२ ॥

हाहाकारोभवत्युग्रस्तस्मिन्द्वारेमयाश्रुतः ॥ अंधकारमयंघोरंनानारोगनिषेवितम् ॥ ३१ ॥ तत्रैवपाप कर्माणोयमदूतैःप्रपीडिताः ॥ मुद्गरैस्ताड्यमानाश्चलोहदंडैश्चदारुणैः ॥ ३२ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्या नेसप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥ ॥ ॥छ॥ ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ तत्रैवनरकादृष्टानानापीडाप्रदाद्विज ॥ कुंभीपाकमुखाघोराघोरैयाह्येकविंशतिः ॥ १ ॥ तानहंसंप्रवक्ष्यामिशृणुध्वंद्विजसत्तमाः ॥ वदमानो पिनरन्काभयभीतोभवाम्यहम् ॥ २ ॥ कुंभीपाकोह्यवीचिश्चमहारौरवरौरवौ ॥ कक्षभेदोमहाघोरो दारुणोलोमहर्षणः ॥ ३ ॥

इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

नासिकेत बोले ॥ कि हे द्विज ! वहांई मैं नाना प्रकारकी पीडानके देनहारे नरक देखे वे कुंभीपाक आदि महाघोर इक ईस मुख्यहैं ॥ १ ॥ उनको मैं कहौंगो हे ब्राह्मणो ! तुम सुनो जिन नरकनको कहतो भयो मैं भयभीत होउँहों ॥ २ ॥ कुंभीपाक १

अवीचि २ महारौरव ३ रौरव ४ कक्ष भेद ५ महाघोर रोमनको हर्षित करावनहारो दारुण ६ ॥ ३ ॥ और महाघोर तपन ७ और बडो अद्भुत अनिश्वास ८ तप्तांगार ९ तप्तभूमि १० तैसेही असिपत्र वन ११ ॥ ४ ॥ और पीवकी भरी भई नदी १२ और कृमीनसों भरो भयो कप १३ तैसेही विष्ठासों भरो भयो कूप १४ और कर्ण नासाको विकर्त्तन १५ ॥ ५ ॥ तथा

तपनश्चमहाघोरोऽनिःश्वासोमहदद्भुतः ॥ तप्तांगारस्तप्तभूमिरसिपत्रवनंतथा ॥ ४ ॥ पूयपूर्णानदीचैवकूपश्चकृमिपूरितः ॥ विष्ठापूर्णस्तथाकूपःकर्णनासाविकर्तनः ॥ ५ ॥ घृतपाकस्तथाचैवगुडपाकस्तथैवच ॥ संतप्तवालुकश्चैवतथैवक्षुरवर्धकः ॥ ६ ॥ पर्वतारोहणंचैवशूलारोहणमेवच ॥ तप्तसंदंशकाग्रेणनेत्रोत्पाटनमेवच ॥ ७ ॥ ब्रह्मघ्नास्तत्रमेदृष्टागोघ्नाश्चपितृघातकाः ॥ मित्रंविश्वास्यमुह्यंतियेचगर्भनिपातिनः ॥ ८ ॥ स्त्रीणांदोषगृहीतारस्तथैवगुरुतल्पगाः ॥ ॥ परनारीरतायेचपरद्रव्याभिलाषिणः ॥ ९ ॥

घृतपाक १६ तथा गुडपाक १७ संतप्त वालुक १८ तथा क्षुरवर्धक १९ ॥ ६ ॥ पर्वतारोहण २० शूलारोहण २१ और तपीभई सँडसीनसों नेत्रोंको उखाडनो ॥ ७ ॥ वहाँ मैंने ब्रह्महत्यारे गौके हत्यारे पिताके मारनेहारे और मित्रको विश्वास कराकै जे मोहित होयहैं और जे गर्भक गिरावनेहारेहैं ॥ ८ ॥ और जे स्त्रीनके दोषनको ग्रहण करैं हैं और जे गुरुकी स्त्री

सों गमन करैं हैं और जे पराई नारीसों रतहैं और जे पराये द्रव्यके लेनहारे हैं ॥ ९ ॥ और जे गो तथा ब्राह्मणको परित्याग करैं हैं और जे पतिव्रता स्त्रीनको त्याग करैं हैं और जे राजानको दोष लगावैं हैं और जे पराये धर्मकी निंदा करैं हैं ॥ १० ॥ और जे झूँठी साक्षीके देनहारे हैं और जे क्रूर कर्मनके करन हारेहैं और जे काहूको दुःखी देखि प्रसन्न होयहैं और जे काहू सुखी देखि सदा दुःखित होयहैं ॥ ११ ॥ और सत्य तथा शौच करि रहित जे सदा पापहीमें रमैं हैं और जो चुगली करैं हैं और

गोब्राह्मणपरित्यागीसाधुवृत्ताःस्त्रियस्तथा ॥ त्यजंतिदूषकाराज्ञांपरधर्मस्यनिंदकाः ॥ १० ॥ कूटसाक्षिप्रदाता रःक्रूरकर्मरताश्चये ॥ दुःखितेहर्षकारीचसुखितेदुःखितःसदा ॥ ११ ॥ पापेषुरमतेनित्यंसत्यशौचविवर्जितः ॥ सूचकःकलुषोनित्यंचौर्येणैवोपजीवति ॥ १२ ॥ भूहर्तागृहहर्ताचदेवद्रव्यापहारकः ॥ १३ ॥दयाहीनादुराचारा दानधर्मविवर्जिताः ॥ महापापेनसंयुक्तास्तथायेबकवृत्तयः ॥ १४ ॥ नश्रुतंचगुरोर्वाक्यंशास्त्रवार्तांतथैवच ॥ पुराणसंभवंवाक्यंयेनयेनकदाचन ॥ १५ ॥

जाको मन सदा कलुष रहेहै और जो चोरीकी जीविका करै है ॥ १२ ॥ और जो काहूकी धरती तथा घर छीनि लेयेहै और जो देवतानके द्रव्यको हरिलेयेहैं ॥ १३ ॥ और जे दुराचारी दयाहीन और दान तथा धर्मसों रहित हैं और जिनको वडो पाप लगोहै और जे वकवृत्ती हैं ॥ १४ ॥ और जिनने गुरुके वाक्य तथा शास्त्रकी वार्ता नहीं सुनीहै और जाने पुराणको वाक्य नहीं सुनो है ॥ १५ ॥

और जे वडे क्लेशको करैं हैं और अपने धर्मसों रहितहैं ये सव तथा और वहुतेरे अपने पापनसों नरकनमें दुःख भोगते भये देखे ॥ १६ ॥ ॥ इति श्रीमत्पंडितकेशवप्रसादकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नासिकेत वोले ॥ मर्त्यलोकमें पापी और पापही आचारमें लगेभये मनुष्य देहको छोडिकै फिरि यातनाको देह

महाक्लेशकराश्चैवानिजधर्मविवर्जिताः ॥ एतेचान्येचबहवोमयादृष्टाह्यनेकशः ॥ नरकेषुचसर्वेषुपच्यमानाः स्वदुष्कृतैः ॥ १६ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ मर्त्यलोकेतुपापिष्ठाःपापाचारयुतानराः ॥ देहंत्यक्त्वापुनर्लब्ध्वायातनादेहमित्युत ॥ १ ॥ दूतैःकृष्टाःपुरींयांति गृहीताइवमर्कटाः ॥ वैवस्वतस्यभोविप्राःसभायांसंस्थितस्यच ॥ २ ॥ ॥ सभामध्येस्थितायेतुतान्छृणुध्वंद्विजोत्तमाः ॥ कृष्णद्वैपायनःशृंगीभरद्वाजोमहामुनिः ॥ ३ ॥ दुर्वासागौतमश्चैवमरीचिर्भृगुरेवच ॥ पिप्पलादःपुलस्त्यश्चपुलहःसनकस्तथा ॥ ४ ॥

पावे हैं ॥ १ ॥ और वे पापी पकरे भये वानरनके समान यमके दूतनकरिकै खेंचे गये वा पुरीको जायहैं और हे विप्रो ! सभामें वैठे भये यमराजके समीप जायहैं ॥ २ ॥ और हे द्विजोत्तमो ! धर्मराजकी सभामें जे स्थितहैं उनको सुनो, कृष्णद्वैपायन, शृंगीऋषि और महामुनि भरद्वाज ॥ ३ ॥ दुर्वासा, गौतम, मरीचि और भृगु, पिप्पलाद, पुलस्त्य, पुलह तथा सनक ॥ ४ ॥

और सुरभि, सुरदेव वडे तपस्वी वाल्मीकि और विश्वामित्र, वासिष्ठ, क्रतु, दक्ष तथा हरि ॥ ५ ॥ ए सब तथा और बहुतसे मैंने अनेक देखे वेदके जाननेहारे और संदेहके दूरि करनेहारे ये सब यमके साथमें धर्म अधर्मको सदा विचार करैं हैं ॥ ६ ॥ और पापी मनुष्यनके पापको निर्णय करिकै यमके दूतन करि दंड दिये जायहैं ब्रह्महत्यारो जो पुरुषहै वह कुंभीपाक नाम नरकमें

सुरभिःसुरदेवश्चवाल्मीकिश्चमहातपाः ॥ विश्वामित्रोवसिष्ठश्चक्रतुर्दक्षोहरिस्तथा ॥ ५ ॥ एतेचान्येचबहवोमयादृष्टाह्यनेकशः ॥ यमेनसहिताःसर्वेधर्माधर्मविचारणाम्॥ कुर्वंतिसततंविप्रावेदज्ञाःसंशयच्छिदः ॥ ६ ॥ निर्णीयपापिनांपापंदंड्यतेहियमानुगैः ॥ ब्राह्मणघ्नश्चयःपापःकुंभीपाकेसपच्यते ॥ ७ ॥ गोघ्नाश्चैव कृतघ्नाश्च येचस्त्रीगर्भपातिनः ॥ तैलयंत्रेणपीड्यंतेयमदूतैर्भयंकरैः ॥ ८ ॥ स्वामिद्रोहरतायेचगुरुद्रोहकराश्चये ॥ विश्वासघातकायेचछिद्यंतेक्रकचैर्द्विधा ॥ गरदायेचजंतूनांपच्यंतेह्यनलेषुते ॥ ९ ॥

पचायो जाय है ॥ ७ ॥ गौके हत्यारे और कृतघ्नी तथा जे स्त्रीनके गर्भके गिरावनेहारे हैं वे भयंकर यमदूतनकरिकै तेलके यंत्रमें पीडा दिये जायहैं अर्थात् तेलकोल्हूमें पेरे जायहैं ॥ ८ ॥ और जे स्वामीके द्रोहमें रत हैं और गुरुके द्रोही हैं और जे विश्वासघाती हैं वे आरानसों दो फाँक करे जांय हैं और जे जीवनको विषके देनहारेहैं वे अग्निमें भूँजे जायहैं ॥ ९ ॥

और जे क्षेत्रकी वृत्तिके हरने हारेहैं और जे पराई स्त्रीसों भोग करने हारेहैं और जे जीवनकी हिंसा करै हैं वे गुडपाक नाम नरकमें पचाये जाय हैं ॥ १० ॥ पराये द्रव्यको चिंतवन करनो और मनमें अनिष्टको विचारनो और झूंठको आग्रह करनो यह मानसीपाप तीनि प्रकारको है ॥ ११ ॥ कठोरपन झूंठ और सर्वत्र चुगली करनो और विना संबंधको वकनो यह

क्षेत्रवृत्तिहरायेचपरदाररताश्चये ॥ गुडपाकेषुपच्यंतेयेचजीवविहिंसकाः ॥ १० ॥ परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसानिष्टचिंतनम् ॥ वितथाभिनिवेशश्चमानसंत्रिविधंस्मृतम् ॥११॥ पारुष्यमनृतंचैवपैशुन्यंचापिसर्वशः ॥ असंबद्धप्रलापश्चवाङ्मयंस्याच्चतुर्विधम् ॥१२॥ अदत्तानामुपादानंहिंसाचैवाविधानतः ॥ परदारोपसेवाचका यिकंत्रिविधंस्मृतम् ॥ १३ ॥ एवंपापंदशविधंमनुनोक्तंकरोतियः॥पच्यतेनरकेघोरेकालसूत्रेसतुद्विजाः ॥१४॥ अभक्ष्यंभक्षयेद्यस्तुमदिरांपिबतेचयः ॥ अगम्यागमनंचैवगुरुनिंदारतोनरः ॥ १५ ॥

चार प्रकारको वाङ्मय पाप होयहैं ॥ १२ ॥ और नहीं दिये भयोंको लेने और विना विधानके हिंसा करनी और पराई स्त्रीकी सेवा करनी यह तीनि प्रकारको कायिक पाप कहो है ॥ १३ ॥ या प्रकार मनुकरि कहेभये दश प्रकारके पापोंको जो करै हे द्विज ! वह वडे घोर कालसूत्र नाम नरकमें पचायो जायहै ॥ १४ ॥ जो नर अभक्ष्यको भक्षण करै है और जो मदिरा पीवैहैं तथा

अगम्य जे पुत्री भगिनी आदिहैं तिनमें गमनकरै है और जो गुरुकी निंदा करै है ॥ १५ ॥ ये सब पापी मैंने यमलोकमें देखे कि, नरककी यातनानसों अनेक भांति पीडा दिये जायहैं ॥ १६ ॥ जो पुरुष छेंकुरु वड ढाक इनको वृथा काटै है वाको दूत धर्मराजके लोकमें छेदन करै हैं ॥ १७ ॥ जे पापात्मा अल्पबुद्धि मनुष्य वैश्वदेवके अंतमें आयेभये भूंखे अभ्यागतनको

एतेवैपापिनःसर्वेंदृष्टावैवस्वतेपुरे ॥ यातनाभिःपीड्यमानानारकीभिरनेकधा ॥ १६ ॥ शमीन्यग्रोधपालाशच्छेदनंकुरुतेवृथा ॥ तस्यदूताधर्मलोकेछेदपीडांप्रकुर्वते ॥ १७ ॥ अतिथीन्वैश्वदेवांतेह्यागतान्क्षुधयातुरान् ॥ वीक्षंतेक्रूरदृग्भिर्येपापिनोऽत्यल्पबुद्धयः ॥ १८ ॥ तेषामुद्ध्रियतेनेत्रयुग्मंदत्त्वापदंहृदि ॥ १९ ॥ सदापापरतायेतुक्षिप्यंतेरौरवेध्रुवम् ॥ येतुनिर्मंत्रभोक्तारोवैश्वदेवविवर्जिताः ॥ २० ॥ विष्ठाकूपेषुपतितामयादृष्टाअधोमुखाः ॥ दूषयेद्धर्मशास्त्राणितीर्थनिंदांकरोतियः ॥ २१ ॥

क्रूर दृष्टिसों देखैहैं ॥ १८ ॥ उनकी छाती पर पाँव धरिकै दोनों आंखें निकाली जातीहैं ॥ १९ ॥ और जे सदा पापही करै हैं वे निश्चय करिकै रौरवनरकमें डारे जायहैं और जे मंत्रके विना भोजन करै हैं और वैश्वदेव कर्मसों रहित हैं ॥ २० ॥ उनको मैंने विष्ठाके कूपनमें नीचेको झुके हैं मुख जिनके ऐसे परभये देखेहैं और जे धर्मशास्त्रनको दूषित करै हैं और तीर्थनकी

जो निंदा करे हैं ॥ २१ ॥ और आपको अच्छा समझै हैं और अहंकारी हैं वे शिलाके पीठिपर पीसे जाय हैं ऐसे पापी मैंने यमलोकमें हजारन देखे हैं ॥ २२ ॥ ॥ इति श्रीमत्पंडितपरमसुखतनयपंडितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां पापियातनावर्णनंनाम नवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ नासिकेत बोले ॥ याते परे महज्जनोंके रोमांच

आत्मसंभावितःस्तब्धःशिलापृष्ठेषुपिष्यते ॥ एतेवैपापिनोदृष्टायमलोकेसहस्रशः ॥ २२ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेपापियातनावर्णनंनामनवमोऽध्यायः ॥ ९ ॥ ॥ नासिकेतउवाच ॥ ॥ अतः परंमयादृष्टंमहतांरोमहर्षणम् ॥ अद्भुतंतुशृणुध्वंभोमुनयोयेसमागताः ॥ १ ॥ नरकाश्चमयादृष्टा ज्वलदग्निसमप्रभाः ॥ पापिनोयत्रदह्यंतेयमदूतैरनेकधा ॥ २ ॥ ऊर्ध्वकेशामहाकायास्तीक्ष्णदंष्ट्राभयंकराः ॥ वक्रतीक्ष्णनखाग्राश्चसूचीवक्राभयंकराः ॥ ३ ॥

करावनहारो जो अद्भुत मैंने देखो है ताहि आयेभये जे मुनीश्वर हैं वे सुनैंहैं ॥ १ ॥ जलतीभई अग्निके समानहै कांति जिनकी ऐसे नरकमें मैंने देखे जिनमें यम दूतनकरिकै पापी अनेक प्रकारसों जराये जायहैं ॥ २ ॥ ऊपरको जिनके केश और बडी कायावाले और पैनी हैं डाढैं जिनकी और भयानक और टेढी तथा पैनी हैं नखोंकी नोकैं

जिनकी और सुईको समान हैं मुख जिनके ऐसे भयानक ॥ ३ ॥ सब पापी मनुष्यनके त्रास देनेहारे दूरलों देखन हारे हैं नेत्र जिनके और दूर लौं सुननेको है ज्ञान जिनको और दीर्घ काहिये लंबोहै देह जिनको और बड़े बलवान् ॥ ४ ॥ ऐसे दूत केश पकडकर पापकरनहारे पापी मनुष्यनके केशनको पकडकै दुःख देयहैं और जिनके मन विषयनमें लगिरहे हैं उनके मुखनको भंजनकरिकै पीड़ा देयहैं ॥ ५ ॥ हे द्विजो ! कल्पके अंतलौं तप्त खंभोंमें बांधनेको दुःख होयहै और जाने जो पाप कियो है वह वा शुभ अशुभ कर्म

त्रासकाःसर्वपापानांदूरदर्शनचक्षुषः ॥ दूरश्रवणविज्ञानादीर्घकायामहाबलाः ॥ ४ ॥ केशग्रहेणपापिष्ठान्त्सं गृह्यव्यथयंतिच ॥ विषयासक्तमनसांसुखंचक्षणमेवहि ॥५॥ भवेद्दुःखंचकल्पांतंतप्तसूर्मिमयंद्विजाः ॥ येन यद्यत्कृतंकर्मसतद्भुंक्तेशुभाशुभम् ॥ ६ ॥ एवंतत्रमयादृष्टाःपीडाः कर्मसमुद्भवाः ॥ हन्यमानानीयमाना मयादृष्टाह्यनेकशः ॥ ७ ॥ तत्रैवकैर्धर्मदूतैरसिपत्रैश्चताडिताः ॥ कूटसाक्षिप्रदातारःकूटकर्मरताश्चये ॥ ॥ ८ ॥ नीयंतेनरकेघोरेशिरश्छित्वाकुठारकैः ॥ प्राणिनांघातकाश्चैवपीडितायमकिंकरैः ॥ दुःखदाः प्राणिनांयेतुव्याधिकष्टेनपीडिताः ॥ ९ ॥

को भोगैहै ॥ ६ ॥ ऐसे वहाँ मैंने कर्मनसों उत्पन्न भई पीडा देखी और मैंने मारे जाते तथा खैंचे जाते अनेक देखे ॥ ७ ॥ वहाँ कोई यमके दूतन करि असिपत्रनसों ताडन किये जायहैं और झूँठी गवाहीके देनेहारे कुल्हाडीनसों काटिकै घोर नरकमें पहुंचाये जायहैं और प्राणिनके जे मारनेहारेहैं वे यमके दूतनकरि पीडा दिये जायहैं ॥ ८ ॥ और प्राणिनके दुःख देनहारे

हैं वे रोगनके कष्टसों पीडित होयहैं ॥ ९ ॥ घीको चुरावनेहारो घीमें डारो जायहै और तेलको चुरावने हारो तेलमें डारो जायहै और दूधको चुरावने हारो दिव्य हजार वर्षलों दूधमें पडो रहै है ॥ १० ॥ देवताके अर्चन और सेवामें जे भक्तिभावसे रहित होयहैं और जे दुष्टकर्मनमें सदा लगके रहै हैं वे पाशनमें बांधिकै कदर्थित करे जाय हैं ॥ ११ ॥ और जे फुलवारीके काटनहारे हैं तथा देवता

घृतचौरोघृतेक्षिप्तस्तैलेतैलापहारकः ॥ दुग्धचौरोभवेद्दुग्धेदिव्यवर्षसहस्रकम् ॥ १० ॥ देवतार्चनसेवायांभक्तिभावविवर्जिताः ॥ दुष्टकर्मरतायेतुपाशैर्बद्धाःकदर्थिनः ॥ ११ ॥ वाटिकाछेदितायेनदेवप्रासादभंजकः ॥ कृतंकर्महृतंयेनपरान्नंद्विजपुङ्गवाः ॥ १२ ॥ किंकरैर्वध्यमानास्तेरुदंतिकरुणंबहु ॥ सर्वजीवदयाहीनानिष्ठुराःक्रूरमानसाः ॥ १३ ॥ नरकेपीडितादूतैर्यावच्चंद्रदिवाकरौ ॥ मार्गेपुच्छेदितावृक्षाविकीर्णाःकंटकाः पथि ॥ १४ ॥

के मंदिरको फोरन हारेहैं और हे श्रेष्ठ ब्राह्मणो ! जे करेभये कर्मको चुराते हैं तथा पराये अन्नको चुरातेहैं ॥ १२ ॥ वे यमके दूतन करि मारे भये वडी करुणा वहुत रोवै हैं और जे सव जीवनकी दयासों हीनहैं और निष्ठुर तथा क्रूरमनवाले हैं ॥ १३ ॥ वे दूतनकरि तवताई नरकमें पीडा दिये जाय हैं जवलौं सूर्य चंद्रमा रहेगें और जे मार्गमें वृक्षनको काँटै हैं और मार्गमें काँटे फैलावै हैं ॥ १४ ॥

उनको दूत वज्रके दंडनसों ताडन करै हैं और जो विष मिलायकैं प्राणिनको भोजन देयहै ॥ १५ ॥ वाके मुखमें यमके दूत तप्तलोहको डारै हैं और जो नारी अपने पतिको छोडिकै पराये पतिसों रति करै है ॥ १६ ॥ वा दुष्टा नारीको भयानक मुद्गरनसो ताडन करिक भयंकर यमक दूत दारुण दुःख देय हैं ॥ १७ ॥ और जलती आगिसों भरेभये लोहके खंभनसों

भवेत्तेषांवधोद्भूतैर्वज्रदंडैश्चताडनम् ॥ भोजनंविषसंमिश्रंयोदद्यात्प्राणिनांयदि ॥ १५ ॥ तप्तलोहोमुखे तस्यदीयतेयमकिंकरैः ॥ पतिंसंत्यज्ययानारीपरपुंसिरताभवेत् ॥ १६ ॥ तांनारींनिरयेदुष्टांताडितां भीममुद्गरैः ॥ दारुणैर्दीयतेदुःखंयमदूतैर्भयंकरैः ॥ १७ ॥ प्रज्वलद्वह्निसंपूर्णेलोहस्तंभेप्रतापनम् ॥ अगम्यागमनंयेनकृतंवैपापकारिणा ॥ १८ ॥ स्वगोत्रांमनसायातोयमलोकेसदुःखभाक् ॥ नैवपश्यति दोषंस्वंपरदोषंप्रकाशयेत् ॥ १९ ॥ पच्यतेह्यंधकूपेसपरकार्यविभेदकः ॥ दूषयेत्सर्वशास्त्राणिदेवतांब्रा ह्मणंगुरुम् ॥ २० ॥ जिह्वाच्छेदोभवेत्तस्यमयादृष्टोह्यनेकधा ॥ योहरेद्रत्नवस्तूनिसुवर्णाभरणानिच ॥ २१ ॥

बांधिकै तपाये जाय हैं और जा पापीने अगम्यासों गमन कियोहै ॥ १८ ॥ और जो सब शास्त्रनको दूषित करै है और जो अपने दोषको नहीं देखै है पराये दोषको प्रगट करै है ॥ १९ ॥ और पराये कामको विगारनेहारो वह अंधकूपनाम नरकमें पचायो जाय है और जो सब शास्त्रनको दूषित करै है और देवता गुरु तथा ब्राह्मणनको दूषित करै है ॥ २० ॥ वाकी जीभ काटी जाय है

मैंने बहुतेरे देखे हैं और जो रत्ननकी वस्तु और सोनेके गहने चुरावै हैं ॥ २१ ॥ और जो मूंगनको तथा हीरानको चुरावै वह कुंभीपाक नाम नरकमें पचायो जाय है और जो खल बालकनको धोखा देकै एकांतमें मीठो खाय है ॥ २२ ॥ हे द्विजोत्तमो ! वाको मैंने आपनो मांस खातो भयो देखो है ऐसे नरनमें अधम पापी यमलोकमें देखे हैं ॥ २३ ॥ इति श्रीमत्पंडित

प्रवालवज्रहर्तायोकुंभीपाकेसपच्यते ॥ एकान्तेमिष्टमश्नातिबालकंवंचयन्खलः ॥ २२ ॥ स्वमांसं भक्ष्यमाणःसमयादृष्टोद्विजोत्तमाः ॥ एतेपापामयादृष्टायमलोकेनराधमाः ॥ २३ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेकृतकर्मवर्णनंनामदशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ अतःपरंमयादृष्टं युष्मभ्यंकथयाम्यहम् ॥ बालकंस्वामिनंपंगुंवृद्धंविप्रंचकन्यकाम् ॥ १ ॥ त्यक्त्वाभुनक्तिपूर्वंयोभर्तारंचपतिव्रता ॥ एतेशाल्मलिवृक्षस्थामयादृष्टाह्यनेकशः ॥ २ ॥

परमसुखतनयपंडितकेशवप्रादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां कृतकर्मवर्णनंनाम दशमोऽध्यायः ॥ १० ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥ या पीछे मैंने जो देखो जो सो तुमसों कहोंगो बालक, स्वामी, पंगा, वृद्ध, ब्राह्मण और कन्या ॥ १ ॥ इन सबन को छोडिकै जो पहले खाय है और जो पतिव्रता पतिसों पहले खाय है ये बहुतसे शाल्मलीवृक्षमें स्थिर मैंने देखे ॥ २ ॥

वह वृक्ष मैंने देखो जरतीभई आगिके समान वाकी कांति है पाँच योजन अर्थात् वीस कोसको वाको विस्तार है और दश योजन अर्थात् चालीस कोसकी वाकी उँचाई है ॥ ३ ॥ तामें बँधेभये पापी यमदूतनकरि ताडना किये जाय हैं वे वज्रके दंडनसों ताडना करे जायहैं और मुद्गरनसों उनके माथे फोरे जायहैं ॥ ४ ॥ फिरि वहाँ मैंने तप्तवालुक नाम नरक देखो वह जरतीभई अग्निके समान है

सतुवृक्षोमयादृष्टोज्वलदग्निसमप्रभः ॥ पंचयोजनविस्तीर्णोदशयोजनमुच्छ्रितः ॥ ३ ॥ तास्मिन्बद्धाः पापिनस्तेताडयंतेयमकिंकरैः ॥ ताडितावज्रदंडैश्चमुद्गरैर्भिन्नमस्तकाः ॥ ४ ॥ पुनस्तत्रमयादृष्टोनरकस्तप्तवालुकः ॥ प्रज्वलद्वह्निसदृशोदह्यंतेतत्रपापिनः ॥ ५ ॥ क्षुधयातत्रपीडयंतेबद्धहस्तपदोनराः ॥ आत्मघातंप्रकुर्वंतिसत्यधर्मविवर्जिताः ॥ ६ ॥ तस्मिँल्लोकेमयादृष्टाःपतितास्तप्तवालुके ॥ स्वधर्मंचपरित्यज्य परधर्मरतानराः ॥ ७ ॥ नकृतंजलदानंयैरन्नदानंचनोकृतम् ॥ नतोषिताविप्रगणास्तथानाग्निमुखेहुतम् ॥ ८ ॥

वामें पापी जराये जाँय हैं ॥ ५ ॥ वामें हाथ पाँव जिनके बँधे ऐसे पापी पीडादिये जाय हैं और जे आत्मघात करैं हैं और सत्य धर्मसों रहित हैं ॥ ६ ॥ उनको वा लोकमें मैंने तप्तवालुक नाम नरकमें परेभये देखे और जे अपने धर्मको छोडिकै पराये धर्म में जाय हैं ॥ ७ ॥ और जिनने जलको दान तथा अन्नको दान नहीं कियो है और न ब्राह्मणनके गणको संतुष्ट कियो है और न

अग्निके मुखमें होम कियो है ॥ ८ ॥ और जे पुरुष गृहस्थीमें रहिकै पंचयज्ञनको नहीं करै हैं उनकी वा स्थानमें फिरि दूसरी देह होजाय है ॥ ९ ॥ वे मनुष्य अपनेही कर्मनसों कीरनकी योनिमें उत्पन्न होय हैं और जो झूँठी गवाही देय है तथा घाटि तोलै है ॥ १० ॥ वह परलोकमें अपने करेभये कर्मनसों पवन और अग्निकरिकै जराये जाय हैं और जे नर ब्राह्मणनको और देवता

गृहेस्थितायेपुरुषाः पंचयज्ञविवर्जिताः ॥ तस्मिन्स्थानेमयादृष्टंपुनर्देहांतरंभवेत् ॥ ९ ॥ कृमियोनिषु जायंतेनराः स्वेनैवकर्मणा ॥ कूटसाक्ष्यंवदेद्यस्तुकूटमानंकरोतियः ॥ १० ॥ सोऽमुत्रस्वकृतेनैवदह्यते वायुवह्निना ॥ विप्रांश्चदेवताश्चैवगंगादिसरितस्तथा ॥ ११ ॥ नमन्यतेनरोयस्तुनरकेपीडयतेभृशम् ॥ निर्दयामानमारूढाजीवहिंसापरायणाः ॥ १२ ॥ तेमुत्रनियतंघोरैःपीडयंतेयमकिंकरैः ॥ मातृष्वसुः सुतांश्चैवगुरोःपुत्रान्नराधमाः ॥ १३ ॥

नको तथा गंगा आदि नदीनको ॥ ११ ॥ नहीं मानै हैं वे नरकमें अत्यंत पीडित होय हैं और जे निर्दयी हैं तथा मानी हैं और जीवहिंसामें परायण हैं ॥ १२ ॥ वे परलोकमें निश्चय यमके किंकरनकरि पीडित करे जाय हैं और जे अधम मनुष्य मातृष्वसा

जो मावसी हैं ताके पुत्रनको तथा गुरुके पुत्रनको ॥ १३ ॥ भाई करकै नहीं मानै हैं वे दंड जिनके हाथमें ऐसे महाघोर यमके दूतन करिकै वध बंधन आदिसों परलोकमें बहुतही पीडा दिये जाँय हैं हे ब्राह्मणो ! मैंने यह सब बडो कौतुक देखो ॥ १४ ॥ इति श्री मत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांनरकवर्णनंनामएकादशोऽध्यायः ॥

भ्रातृत्वेननमन्यंतेपीडयंतेमुत्रतेभृशम् ॥ दंडहस्तैर्महाघोरैर्वधबंधादिभिस्तथा ॥ एतत्सर्वंमयादृष्टंद्विजाः कौतूहलंमहत् ॥ १४ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेनरकवर्णनंनामैकादशोऽध्यायः ॥ ११ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामियद्दृष्टंयमशासनम् ॥ तस्मिन्वैदक्षिणेद्वारेक्लिश्यंतेपापिनोजनाः ॥ १ ॥ तत्रनानाविधादृष्टादूतायेवैविभीषणाः ॥ दीर्घदेहाश्चलंबोष्ठाऊर्ध्वकेशाभयंकराः ॥ २ ॥ वराहसदृशाकाराःकृष्णवर्णाःकृशोदराः ॥ अपरेसिंहपादाश्चव्याघ्ररूपास्तथापरे ॥ ३ ॥

॥ ११ ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥ ॥ या पीछे जो मैंने यमको शासन देखो है ताहि कहौंगो वा दक्षिणके द्वारमें पापीजन क्लेशको पावे हैं ॥ १ ॥ वहाँ नानाप्रकारके भयानक यमके दूत देखे जिनकी लंवी देह लंवे ओष्ठ और ऊपरको केश ऐसे भयावने ॥ २ ॥ उनमें काहूको सुअरको आकारहै काले रंगके हैं पेट सूखोसोहैं और उनके पाँय सिंहकेसे हैं और कोऊ व्याघ्रके रूपहैं ॥ ३ ॥

कोऊ बिलावके रूपमें हैं और काहूके नेत्र बिलावकेसेहैं और कोऊ साँप तथा बिच्छूके रूपमें हैं और भयानक आभरणनसों भूषित हैं ॥ ४ ॥ कोऊ त्रिशूलको लियेहैं और कोऊ दंड तथा मुद्गरनको लियेहैं और कोऊ खड्ग तथा खेटको धारण कियेहैं और कोऊ भुशुंडी तथा परिघोंको लियेहैं ॥ ५ ॥ कोऊ भिंदिपाल जो गोफन है ताहि लियेहैं और कोऊ मूशल लियेहैं और कराल मुखके हैं और कोऊ

मार्जाररूपिणश्चान्येतन्नेत्रास्तुतथापरे ॥ सर्पवृश्चिकरूपाश्चरौद्राभरणभूषिताः ॥ ४ ॥ त्रिशूलधारिणः केचिद्दंडमुद्गरधारिणः ॥ खड्गखेटधराःकेचिद्भुशुंडीपरिघायुधाः ॥ ५ ॥ भिंदिपालधराः केचित्केचिन्मुशलपाणयः ॥ करालास्याःशक्तिधराःकेचित्परशुपाणयः ॥ ६ ॥ निर्मितायमराजेनपापानुग्रहकारिणा ॥ नानायुधधरादूतास्ताडयंतिदुरात्मनः ॥ ७ ॥ पापकर्मरतान्क्रूरांस्तथैवकलहप्रियान् ॥ क्षिपंतियमदूतास्तेह्यसिपत्रवनांतरे ॥ ८ ॥ पतिताःकालसूत्रेषुमयादष्टाश्चकेचन ॥ जीवंतिम्लेच्छवृत्त्याये चौरकर्मोपजीविनः ॥ ९ ॥

शक्ति लियेहैं और कोऊ फरसाको धारण कियेहैं ॥ ६ ॥ पापीन पर अनुग्रह करन हारे जे यमराजहैं तिन करिकै बनाये गयेहैं और नानाप्रकारके शस्त्रनके धारण करन हारे दूत दुष्टनकी ताडना करैहैं ॥ ७ ॥ पाप कर्ममें जे रतहैं और जे क्रूरहैं तथा जिनको कलह प्यारोहै ऐसे पापी मनुष्यनको यमदूत असिपत्रवननाम नरकमें डारैहैं ॥ ८ ॥ और जे म्लेच्छकी वृत्तिसों जीवका करैहैंऔर

जे चोरीके कर्मसों जीवका करेहैं ॥ ९ ॥ ये पहले जन्मके कर्मनसों बहुतसी यातना सहैहैं और उनको कुत्ते खायेहैं और कौआ तथा गीध चोथै हैं ॥ १० ॥ वा स्थानमें मैंने भयंकररूप और महाघोर यमदूतनकरि बहुत पीड़ित मनुष्य देखे ॥ ११ ॥ एक समय मैंने भैंसेके आसन पर बैठे भये महाबल तथा पराक्रमी वैवस्वत यमको देखो ॥ १२ ॥ हे द्विजो ! कुंडलनसों शोभित

पूर्वकर्मभिरेतेवैसहंतेबहुयातनाः ॥ भक्षयंतिचताँच्छ्वानाःकाकगृध्राःकर्षंतिच ॥ १० ॥ तत्रस्थानेमयादृष्टा मनुष्याबहुपीडिताः ॥ रौद्ररूपैर्महाघोरैर्यमदूतैरितस्ततः ॥ ११ ॥ एकस्मिन्त्समयेदृष्टोमयावैवस्वतो यमः ॥ महिषासनमारूढोमहाबलपराक्रमः ॥ १२ ॥ कुंडलालंकृतःश्रीमान्दंडपाशधरोद्विजः ॥ बुद्धिशालीमहाकायोदूतैश्चपरिवारितः ॥ १३ ॥ आगतोनरकान्वीक्षन्क्रोधरक्तांतलोचनः ॥ तदादूतगणाःसर्वेनत्वातस्याग्रतःस्थिताः ॥ १४ ॥ ॥ यम उवाच ॥ ॥ शृणुध्वंवचनंदूताःशीघ्रंकुरुतमाचिरम् ॥ भूतलेराक्षसाघोरास्तिष्ठंतेधर्मवर्जिताः ॥ १५ ॥

श्रीमान् और दंड तथा फाँसीको लिये भये बुद्धिसों शोभायमान बडोहै शरीर जाको और दूत करिकै वेष्टितहै ॥ १३ ॥ क्रोधसे लालहैं नेत्र जिनके ऐसे यम नरकनको देखते भये आये तब सब दूतगण उनको नमस्कार करिकै आगे ठाढे होत भये ॥ १४ ॥ यम बोले ॥ हे दूतो ! मेरो वचन सुनो आर शीघ्र करौ देरी न लगै पृथिवीमें धर्मरहित घोर राक्षस स्थित हैं ॥ १५ ॥

उनको शीघ्र लाओ और उन बलवाननसों डरनो न चाहिये धर्मराजके ऐसे कहने पै दूत वेगसों महीतलमें आवत भये ॥ १६ ॥ और सब दूत मिलिकै जहाँ वे दानव स्थितहैं वहां जात भये और वहां उनके साथ भालो मुद्गर तथा प्रासनाम शस्त्रसों युद्ध होत भयो ॥ १७ ॥ और तीर लोहेके दंडे तरवार त्रिशूल भुशुंडी इत्यादि अस्त्र शस्त्र न करिकै उन दानवन तथा दूतनसों रोमांचित

तानानयध्वंत्वरितंनभेतव्यं महाबलान् ॥ इत्युक्तेधर्मराजेनवेगेनैवमहीतले ॥ १६ ॥ गतास्तेमिलिताः सर्वेयत्रतेदानवाःस्थिताः ॥ तत्रतैरभवद्युद्धंप्रासमुद्गरतोमरैः ॥ १७ ॥ सायकैर्लोहदंडैश्चखड्गैःशूलैर्भुशुंडिभिः ॥ एवंतेषामभूद्युद्धंमहद्धैरोमहर्षणम् ॥ १८ ॥ किंकरैःकालपाशेनजितास्तेराक्षसारणे ॥ पाशैर्बद्धान्महादैत्यानानिन्युस्तेयमांतिकम् ॥ १९ ॥ धर्मराजश्चतान्दृष्ट्वामहाघोरतरोभवत् ॥ स्वान्दूतान्प्रत्युवाचाथनीयंतांचित्रवेश्मनि ॥ २० ॥ चित्रगुप्तस्तुतान्सर्वान्कृमिकुंडेषुन्यक्षिपत् ॥ एवं विप्राजगत्सर्वंकालपाशवशंभवेत् ॥ २१ ॥

करन हारो बडो युद्ध होत भयो ॥ १८ ॥ यमके किंकरनकरिकै वे राक्षस रणमें कालपाश करिकै जीते गये और पाशनसों बंधे भये उन राक्षसनको वे दूत यमके समीप लावत भये ॥ १९ ॥ धर्मराजहू उनको देखिकै बहुतही घोर होजात भये और अपने दूतनको आज्ञा देत भये कि, इनको तुम चित्रगुप्तके पास ले जाओ ॥ २० ॥ और चित्रगुप्तने उन सबनको कृमि जे कीडेहैं तिनको

कुंडमें डरवाय दियो हे विप्रो ! या प्रकार सब जगत् कालपाशके वशमें होयहै ॥२१॥ और कोई जवान कोई बालक कोई वृद्ध तथा और जे कोई गर्भमें स्थित हैं वे सब या प्रकार कालके वशमें हैं ॥ २२ ॥ और जे धर्महीन मनुष्य पापमें प्रवृत्त होयहैं वे याहू लोकमें दुःख तथा दरिद्रता करि युक्त होयहैं ॥ २३ ॥ और कियो भयो शुभ अशुभ कर्म अवश्यही भोगनो परैहै ॥ २४ ॥ इति श्री

युवानोबालकाःकेचिद्वृद्धाश्चगर्भगाःपरे ॥ एवंभूतानिसर्वाणिकालस्यवशवर्तिनः ॥ २२ ॥ येचपापेप्रवर्त्तं तेधर्महीनाश्चमानवाः ॥ इहलोकेचदृश्यंतेदुःखदारिद्रचपूरिताः ॥ २३ ॥ अवश्यमेवभोक्तव्यंकृतंकर्मशुभाशुभम् ॥ २४ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेद्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नासिकेत उवाच तत्रस्थानेमयादृष्टाधर्मिणश्चद्विजोत्तमाः ॥ फलंकृतस्यभोक्तव्यंधर्मराजस्यचाज्ञया ॥ १ ॥ तत्रस्थाने महानद्योमयादृष्टामनोहराः ॥ शर्करादधिदुग्धाज्यमधूनांचमहानदी ॥ २ ॥

मत्पंडितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां द्वादशोऽध्यायः ॥ १२ ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥ और वा स्थानमें हे द्विजोत्तमो ! मैंने अधर्मी देखे और धर्मराजकी आज्ञासों किये भयेको फल भोगनो अवश्यकहै ॥ १ ॥ और वा स्थानमें मैंने मनोहर महानदी देखी और शर्करा दही दूध घी तथा मधु जो शहदहै

ताकी महानदी देखी ॥ २ ॥ पूर्व तथा उत्तर दिशाके मध्यमें मैंने धर्मात्मा देखे वे सुंदर वस्त्र धारण करे भये और दिव्यही आभरणनसों भूषित हैं ॥ ३ ॥ सुवर्णके कुंडल धारण किये भये हैं और केयूरके बाजुहैं तिनोंके धारण करनहारे और वीणा तथा वंशीके शब्दनकरि युक्तहै और चमरनसों शोभितहैं ॥ ४ ॥ ऊँचे आसनपर बैठे हैं और अप्सरा उनकी सेवा करि रहीहैं दिव्य माला और दिव्यही हरिचंदनआदिके लेपनसों उनके अंग सुगंधित और नाना

पूर्वोत्तरदिशोर्मध्येमयादृष्टाश्चधार्मिकाः ॥ दिव्यांबरधरारम्यादिव्याभरणभूषिताः ॥ ३ ॥ हेमकुंडल शोभाढ्याहारकेयूरधारिणः ॥ वीणावंशनिनादाढ्याश्चामरैरुपशोभिताः ॥ ४ ॥ उच्चासनसमारूढाह्य प्सरोभिरुपासिताः ॥ दिव्यस्रग्गंधलिप्तांगाविविधैरुत्सवैर्वृताः ॥ ५ ॥ तप्तकांचनवर्णाभामुकुटैरुपशो भिताः ॥ एवंविधाधार्मिकास्तेयमलोकेसमासते ॥ ६ ॥ श्रद्धयाविप्रमुख्येभ्योदत्तानिविविधानिच ॥ अन्नदानानिवस्त्राणिहिरण्यंभक्ष्यभोजनम् ॥ ७ ॥

प्रकारके जे उत्सवहैं तिन करिकै युक्त हैं ॥ ५ ॥ तपाये भये सुवर्णके वर्णके समानहै वर्ण जिनको ऐसे मुकुटनसों शोभित या प्रकारके जे धर्मात्माहैं वे यमके लोकमें निवास करे हैं ॥ ६ ॥ और जिन पुरुषनने विप्रनमें जे मुख्यहैं तिनके लिये श्रद्धासों नाना प्रकारके दानदिये हैं अर्थात् अन्नदान वस्त्रनको दान सुवर्ण भक्ष्य वस्तु तथा भोजनको दान कियाहै ॥ ७ ॥

और तिलदान तथा भूमिको दान जिन धर्म्मात्मा मनुष्यनकरिकै कियो गयोहै वे दान तथा धर्मके प्रभावसों पूर्ण सब सौख्य पावैं हैं ॥ ८ ॥ और जे लोग वर्ण तथा आश्रममें स्थितहोकै अपने धर्मको पालन करै हैं और जे वैश्वदेवके पीछे आयेभये अभ्या गतनको पूजन करै हैं ॥ ९ ॥ दया तथा दाक्षिण्य करिकै युक्त अपने धर्ममें स्थित जे संध्योपासन आदिकर्मनको और वेदा

तिलदानंभूमिदानंकृतयर्धार्मिकैर्नरैः ॥ तेलभंतेऽखिलंसौख्यंदानधर्मप्रभावतः ॥ ८ ॥ वर्णाश्रमस्थाये लेकानिजधर्मस्यपालकाः ॥ आगतान्वैश्वदेवांतेह्यतिथीन्पूजयंतिये ॥ ९ ॥ संध्योपास्त्यादिकर्मा णिवेदाध्ययनमेवच ॥ कुर्वंतियेस्वधर्मस्थादयादाक्षिण्यसंयुताः ॥ १० ॥ गांचविप्रांस्त्रियंकष्टादुद्धरं तिनरोत्तमाः ॥ शृण्वंतिवेदशास्त्रंयेकुर्वंतेविप्रसेवनम् ॥ ११ ॥ तीर्थाटनंचकुर्वंतिसदासंयमसंयुताः ॥ पंचाग्निसाधकायेतुक्रोधलोभविवर्जिताः ॥ १२ ॥ कन्यादानंकृतंयेनरोपिताधर्मतोद्रुमाः ॥ यतिनोयो गयुक्ताश्चानिराहारायतव्रताः ॥ १३ ॥

ध्ययनको अपने धर्ममें स्थितहोकै करै हैं ॥ १० ॥ और जे उत्तम नर गौ तथा ब्राह्मणको कष्टते उबारैहैं और जे वेद तथा शास्त्रनको सुनैहैं तथा ब्राह्मणनको सेवन करैहैं ॥ ११ ॥ और जे सदा नियमयुक्त होके तीर्थाटन करै हैं और जे पंचाग्निको साधन करै हैं और क्रोध लोभ करिकै रहितहैं ॥ १२ ॥ और जाने कन्या दान कियोहै और जाने धर्मसों वृक्ष लगायेह और यती तथा

योगके करनहारे और निराहार व्रतमें तत्पर ॥ १३ ॥ और अकालमें अन्नके देनेहारे और सस्ते समयमें सोनेके देनहारे और जाडेमें वस्त्रनके देनहारे तथा आगिसों तपावनहारे ॥ १४ ॥ और पराये उपकारके करनहारे और धर्म अधर्मके विचार करन हारे और सदा शास्त्रनको विचार करनहारे और जे नित्य पराये हितमें लगे रहतेहैं ये सब मैंने धर्मराजके लोकमें देखे यामें

दुर्भिक्षेऽन्नप्रदातारःसुभिक्षेचहिरण्यदाः ॥ हेमंतेवस्त्रदातारोवह्निदाश्चतथैवच ॥ १४ ॥ परोपकारनिरता धर्माधर्मविचारकाः ॥ शास्त्रेषुनिरतानित्यंनित्यंपरहितेरताः ॥ एतेसर्वेमयदृष्टाधर्मलोकेनसशंयः ॥ १५ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेपुण्यधर्मनिरूपणंनामत्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ पुनः स्थानंमयादृष्टंधर्मात्मायत्रतिष्ठति ॥ नदीपुष्पोदकानामजलंवहतिशीतलम् ॥ १ ॥ सुवर्णवालुकास्त स्यांतीरेनानाविधाद्रुमाः ॥ पुष्पाणिचसुगंधीनिधारयंतिचतेद्रुमाः ॥ २ ॥

संदेह नहींहै ॥ १५ ॥ इति श्रीपण्डितकेशवप्रसादशर्माद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां त्रयोदशोऽध्यायः ॥ १३ ॥ नासिकेत बोले ॥ फिरि मैंने वह स्थान देखो जहाँ धर्मात्मा रहैहैं और जहाँ पुष्पोदका नाम नदीहै जामें निर्मल जल बहै है ॥ १ ॥ और वामें सोनेकी बालूहै और किनारेमें नाना प्रकारके बहुतसे वृक्षहैं और वे वृक्ष नाना प्रकारके सुगंधित फूलनको धारण करेहैं ॥२॥

और हे विप्रो ! मैंने वा नदीके किनारे बहुतसे मंदिर देखे उन मंदिरनमें धर्मके पालनहारे मनुष्य क्रीडा करै हैं ॥ ३ ॥ शीतल मंद सुगंध पवन करिकै सेवन कियेगये मनुष्य और दिव्य रूपनको धारण करन हारी नारी श्रेष्ठ नरनके साथ विहार करै हैं ॥ ४ ॥ और सिद्धनके तथा गंधर्वनके वृंदन करिके तथा किन्नरन करिके सेवितहैं और नाना प्रकारके वस्त्रनको पहिरे हुए

नद्यास्तीरेह्यहंविप्रादृष्टवान्मंदिराणिच ॥ तेषुक्रीडंतिमनुजाःसदाधर्मस्यपालकाः ॥ ३ ॥ शीतमंदसुगंधैश्चपवनैःसेवितानराः ॥ दिव्यरूपधरानार्यःक्रीडंतिनरपुंगवैः ॥ ४ ॥ सिद्धगंधर्ववृंदैश्चकिन्नरैश्चोपसेविताः ॥ नानावस्त्रपरीधानानानारत्नोपशोभिताः ॥ ५ ॥ रूपलावण्यसंयुक्तादृष्टमात्रामनोहराः ॥ संपूर्णचंद्रवदनाःकर्णांतायतलोचनाः ॥ ६ ॥ एवंविधाःस्त्रियोरम्यामोदंतेपतिभिःसह ॥ पुष्पोदकायास्तीरेतेनरानार्यश्चशोभनाः ॥ ७ ॥ वसंतोविविधान्भोगान्भुंजंतेपूर्वकर्मणा ॥ नरास्त्रैलोक्यविख्याता धर्मराजपुरेस्थिताः ॥ ८ ॥

नाना प्रकारके रत्ननसों शोभितहैं ॥ ५ ॥ रूपकी लावण्य जो सुंदरताई है ता करिकै संयुक्तहैं और देखनेही सो मनकी हरनहारी हैं और पूरे चंद्रमाके समान जिनके मुख और कानों ताईहैं बडे नेत्र जिनके ॥ ६ ॥ या प्रकारकी सुंदर स्त्री पतिनके साथ आनंद करि रहीहैं वा पुष्पोदका नाम नदीके किनारे नर नारी सब सुंदरहैं ॥ ७ ॥ और वहाँ वसते भये नर नारी पूर्व कर्मनसों नाना

प्रकारके भोगनेको भोगैहैं और धर्मराजके पुरमें वसन हारे नर तीनोंलोकनमें विख्यातहैं ॥ ८ ॥ वहाँ न तौ क्षुधा लगैहै और न पिपासा लगैहै और न सरदी गरमीको भयहै और न वुढापाहै न मृत्युहै न दुःखहै और न पलितहै ॥ ९ ॥ ऐसे पूर्वजन्ममें किये भये सुकृतनसों उत्तम सुख प्राप्त होय है और पापात्मा दुराचारी और नित्य कलह करनहारे ॥ १० ॥ और सव जीवनके निंदक ये

नक्षुधानपिपासाचनतापशीतजंभयम् ॥ नजरानैवमृत्युश्चनदुःखंपलितानिच ॥ ९ ॥ एवंपूर्वकृतेनैवलभ्यतेसुखमुत्तमम् ॥ पापात्मानोदुराचारानित्यंकलहकारिणः ॥ १० ॥ निंदकाःसर्वजीवानांतेवैसर्वत्रदुःखिताः ॥ विष्णुभक्तिरतायेतुविष्णुध्यानपरायणाः ॥ ११ ॥ शृण्वतेयमलोकस्यवार्तामपिनतेनराः ॥ संसारार्णवमुक्तास्तेभवंत्येवनसंशयः ॥ १२ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेपुष्पोदकानदीवर्णनंनामचतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥

सर्वत्र दुःखी रहै हैं और जे विष्णुकी भक्तिमें रतहैं और विष्णुहीके ध्यानमें परायणहैं ॥ ११ ॥ वे मनुष्य यमलोककी वार्त्ताको भी नहीं सुनेहैं और वे संसाररूपी समुद्रसे मुक्त होय हैं यामें संदेह नहीं है ॥ १२ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां पुष्पोदकानदीवर्णनो नाम चतुर्दशोऽध्यायः ॥ १४ ॥ ॥

॥ नासिकेत बोले ॥ या पीछे मैं यमके मार्गको विस्तार तुमसों कहोंगो वह प्रमाणमें अट्ठासी हजार योजनको है ॥ १ ॥ यह मनुष्यलोकसों यमलोकके मार्गको प्रणाम कहै हैं ॥ २ ॥ या मार्गसें यमके पाशन करि बँधो भयो प्रेत हाय हाय ऐसे रावे तो भयो अपने घरको छोडिके यमके लोकको जायहै ॥ ३ ॥ और असिपत्रवन करिकै युक्त वा मार्गमें बहुतसे दुःखहैं क्षुधा

नासिकेत उवाच ॥ ॥ अथाहं संप्रवक्ष्यामियममार्गस्यविस्तरम् ॥ अष्टाशीतिसहस्राणियोजनानांप्रमाणतः ॥ १ ॥ यमलोकस्यचाध्वानमाहुर्मानुषलोकतः ॥ २ ॥ याम्यपाशैर्वृतःप्रेतोहाहेतिप्ररुदन्पथि ॥ स्वगृहंतुपरित्यज्यपुरंयाम्यमनुव्रजेत् ॥ ३ ॥ मार्गेबहूनिदुःखानिअसिपत्रवनान्विते ॥ क्षुत्पिपासार्दितः प्रेतःप्राप्नोतिसततंद्विजाः ॥ ४ ॥ तस्मिन्मार्गेमहाघोरेतप्तवालुकसंयुते ॥ क्वचिदंगारपर्यंकाअंधकारान्वितेद्विजाः ॥ ५ ॥ क्रूरास्तेकिंकराःसर्वेपापिष्ठांस्ताडयंतिहि ॥ मूर्छितान्क्षणमात्रेणपतितान्पुनरुत्थितान् ॥ ६ ॥ विनाधर्मेणपापास्तेपात्यंतेनरकेध्रुवम् ॥ महापापोपपापानिजातिभ्रंशकराणिच ॥ ७ ॥

तथा पिपासासों प्रेत सदा पीडित रहैहैं ॥ ४ ॥ तपी भई वालू करिकै युक्त महाघोर वा मार्गमें और हे द्विजो ! कहीं अंधकारकरि युक्त वामें अंगारनकी सज्जाहैं ॥ ५ ॥ और क्रूर सब यमके दूत पापीनकी ताडना करे हैं तब वे पापी मूर्च्छित होजाय हैं और क्षणमात्रहीमें गिरिकै फिरि उठि आवैहैं ॥ ६ ॥ और धर्मके विना वे पापी निश्चय नरकमें डारे जायहैं और महापाप उपपाप तथा

जातिसों गिरावनहारे पाप ॥ ७ ॥ और जे वर्णसंकर करनहारे तथा मलिन करनहारे और अपात्र करनहारे ऐसे पापनको जे अधम नर करै हैं ॥ ८ ॥ हे द्विजो ! मनुकरि कहे भये उन पापनको मैं कहौंगो ब्रह्महत्या मदिराको पीवनो चोरी गुरुकी स्त्रीसों गमनकरनो ॥ ९ ॥ इन सबनको महापाप कहैहैं और इन पापिनको संसर्ग करनोहू महापातक है और गौको वध अपेयको पीनो

संकरीकरणानिस्युर्मलिनीकरणानिच ॥ अपात्रीकरणंपापंयेकुर्वंतिनराधमाः ॥ ८ ॥ तान्यहंसंप्रवक्ष्यामिमनुनोक्तानिवैद्विजाः ॥ ब्रह्महत्यासुरापानंस्तेयंगुर्वंगनागमः ॥ ९ ॥ महांतिपातकान्याहुःसंसर्गोपिचतैःसह ॥ गोवधोऽपेयसंपानंपारदार्यात्मविक्रयौ ॥ गुरुमातृपितृत्यागःस्वाध्यायस्यसुतस्यच ॥ १० ॥ परिवित्तिताऽनुजेजंतोःपरिवेदनमेवच ॥ तयोर्दानंचकन्यायास्तयोरेवचयाजनम् ॥ ११ ॥ कन्यायादूषणंचैववार्धुषित्वंव्रतच्युतिः ॥ तडागारामदाराणामपत्यस्यचविक्रयः ॥ १२ ॥ व्रात्यताबांधवत्यागोभृतकाध्यापनंतथा ॥ सर्वाकरेष्वधीकारोमहायंत्रप्रवर्त्तनम् ॥ १३ ॥

पराईस्त्रीसों गमनकरनो अपनो विक्रय तथा गुरु माता पिता स्वाध्याय और पुत्रको त्याग ॥ १० ॥ और परिवित्तिपन और जीवको परिवेदन और उनको कन्यादान करनो तथा उन्हीको यजन करावनो ॥ ११ ॥ कन्याको दूषित करनो व्याजको खानो व्रतको छोडनो और तालाव बाग स्त्री तथा संतानको बेचनो ॥ १२ ॥ और व्रात्य अर्थात् संस्कारसों हीन होनो और

बांधवनको त्याग और नौकरी लेकै पढावनो और सब आकरनमें अधिकार करनो तथा बडे यंत्रको चलावनो ॥ १३ ॥ और हिंसा औषध तथा स्त्रीसों जीविका करनी और मारण कर्म तथा मूलकर्म करनो और ईंधनके लिये हरे वृक्षनको काटनो ॥ १४ ॥ और अपनेलिये कामको आरंभ करनो तथा निंदित अन्नको खानो और अग्निहोत्र न करनो चोरी करनो और काहूको पोषण न

हिंसौषधेनस्त्र्याजीवोभिचारोमूलकर्मच ॥ इंधनार्थमशुष्काणांद्रुमाणामवपातनम् ॥ १४ ॥ आत्मार्थंचक्रियारंभोनिंदितान्नादनंतथा ॥ अनाहिताग्नितास्तैन्यमृणपोषणमपक्रिया ॥ १५ ॥ धान्यस्याथपशोःस्तैन्यमपत्यस्त्रीनिषेवणम् ॥ स्त्रीशूद्रविट्कृतवधोनास्तिक्यंचोपपातकम् ॥ १६ ॥ ब्राह्मणस्यरुजःकृत्यंघ्रातिरघ्रेयमद्ययोः ॥ जैह्म्यंपुंसिमैथुनंचजातिभ्रंशकरंस्मृतम् ॥ १७ ॥

करनो अपकार करनो ॥ १५ ॥ और धान्य अथवा पशुको चुरावनो और पुत्रकी स्त्रीको सेवन करनो और स्त्री शूद्र वैश्य इनको वध करनो और नास्तिकहोनो ये उपपातकहैं ॥ १६ ॥ ब्राह्मणको दुःख देनो और न सूँघनेयोग्य वस्तुको तथा मद्यको सूँघनो और कुटिलता करनी तथा पुरुषमें मैथुन करनो ये सब जातिसों भ्रंश करनहारे अर्थात् जातिते गिरावनहारे हैं ॥ १७ ॥

गदहा घोडा ऊँट हरिण और एण जो एक प्रकारका मृगहै ताको वध तथा भेडी बकरीको वध और मछली साँप तथा भैंसेको वध इन सबनको संकरीकरण जानिये ॥ १८ ॥ निंदित मनुष्यनसों धन लेनो वाणिज्य करनो और शूद्रकी सेवा करनी और झूठ को बोलनो ये अपात्रीकरणहैं ॥१९॥ चिउंटी कीडे मकोडोंकी हत्या भोजनके साथ मद्यका सेवन, फल, समिधा तथा फूलोंकी चोरी और कायरता पापकारक हैं जे पापकर्मनमें रत हैं तथा जे सब धर्मनसों रहितहैं वे अधमनर इन छः प्रका

खराश्वोष्ट्रमृगैणानामजाविकवधस्तथा ॥ संकरीकरणंज्ञेयंमीनाहिमहिषस्यच ॥ १८ ॥ निंदितेभ्योधनादानंवाणिज्यंशूद्रसेवनम् ॥ अपात्रीकरणंज्ञेयमसत्यस्यचभाषणम् ॥ १९ ॥ कृमिकीटकयोर्हत्या मद्यानुगतभोजनम् ॥ फलैधःकुसुमस्तेयमधैर्यंचमलावहम् ॥ २० ॥ एभिस्तुषड्विधैःपापैःपच्यंतेतेनराधमाः ॥ पापकर्मरतायेचसर्वधर्मविवर्जिताः ॥ २१ ॥ अदत्तदानाःकृपणागर्विताःलोभसंयुताः ॥ विषयासक्तमनसोबुद्धिमोहान्वितानराः ॥ २२ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्याने पञ्चदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

रके पापनसों नरकमें पचायेजायँ हैं ॥ २० ॥ २१ ॥ जिनने कबहूं दान नहीं दियोहै वे और कृपण गर्वित तथा लोभी और जिनके मन विषयनमें लगि रहे हैं और बुद्धिको मोह जो अज्ञान है ता करिकै युक्तहैं वे सब नरकनमें पचाये जाय हैं ॥ २२ ॥

इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां पंचदशोऽध्यायः ॥ १५ ॥

॥ नासिकेत बोले ॥ कि छोटे वा बडे जाने न जाने पापनमें छः छः महीनापीछे जो प्रायश्चित्त करै है ॥ १ ॥ हे ब्राह्मणो ! पापनसों रहित वे मनुष्य कृतांत जे यमहैं तिनको मुख नहीं देखैं हैं और जो प्रायश्चित्तको नहीं करै है वह नारकी होयहै ॥ २ ॥ और जो मनुष्य वाणी मन तथा कायके कर्मनसों प्रायचित्तको करे है वह गंधर्वनकरिकै सेवन करे गये शुभ लोकनको प्राप्त

नासिकेत उवाच ॥ ॥ ज्ञाताज्ञातेषुपापेषुक्षुद्रेषुचमहत्सुच ॥ षट्सुषट्सुचमासेषुप्रायश्चित्तंतुयश्चरेत् ॥ ॥ १ ॥ निष्कल्मषोनरोविप्राःसुकृतांतंनपश्यति ॥ प्रायश्चित्तमकृत्वेहनरोभवतिनारकी ॥ २ ॥ प्रायश्चित्तंचरेद्यस्तुवाङ्मनःकायकर्मसु ॥ सप्राप्नोतिशुभाँल्लोकान्देवगंधर्वसेवितान् ॥ ३ ॥ वेदाभ्यासरतोनित्यंनित्यंतीर्थोपसेवकः ॥ नित्यंजितेंद्रियंसत्यंयमंरौद्रंनपश्यति ॥ ४ ॥ याम्यंहियातनादुःखंप्रातःस्नायीनपश्यति ॥ प्रातःस्नानेनपूज्यंतेह्यपिपापकृतोनराः ॥ ५ ॥ पृथिवींकांचनंगांच महादानानिषोडश ॥ दत्वातुननिवर्ततेस्वर्गलोकाद्द्विजोत्तमाः ॥ ६ ॥

होयहै ॥ ३ ॥ सदा वेदाभ्यासको करनहारो और नित्य तीर्थनको सेवन करनहारो तथा नित्य जितेंद्रिय नर सत्यही यमको नहीं देखैहै ॥ ४ ॥ और प्रातःकाल स्नान करनहारो पुरुष यमकी यातनानके दुःखनको नहीं देखै हैं प्रातःकालके स्नानसों पापीहू पूजे जाय हैं ॥ ५ ॥ हे द्विजोत्तमो ! पृथिवी सुवर्ण गौ तथा षोडश महादानको देकरिकै प्राणी स्वर्गलोकते नहीं लौटे हैं ॥ ६ ॥

पवित्र अमावास्या आदि तिथिनमें व्यतीपातमें संक्रांतिमें स्नान करिकै और थोरोसो दान करिकै दुर्गतिको नहीं प्राप्त होयहै ॥ ७ ॥ दाता दारुण जो रौरवको मार्ग है तामें नहीं जायहैं और मर्त्यलोकमें धनसों वर्जित जो कुलहै तामें नहीं उत्पन्न होयहैं ॥ ८ ॥ सत्य बोलनहारो तथा सदा मौन रहनहारो और मधुर वचन कहनहारो और क्रोधको न करनहारो

पुण्यासुतिथिषुप्राज्ञाव्यतीपातेचसंक्रमे ॥ स्नात्वादत्वाचयत्किंचिन्नैवगच्छतिदुर्गतिम् ॥ ७ ॥ नैवाक्रमंति दातारोदारुणंरौरवंपथम् ॥ मर्त्यलोकेनजायंतेकुलेधनविवर्जिते ॥ ८ ॥ सत्यवादीसदामौनीप्रियवादीचयो नरः ॥ अक्रोधनःक्षमाचारोनातिवागनसूयकः ॥ ९ ॥ सदादाक्षिण्यसंपन्नःसर्वभूतहितेरतः ॥ गोप्ताच परधर्माणांवक्तापरगुणस्यच ॥ १० ॥ परस्वंतृणमात्रंचमनसापिनयोहरेत् ॥ नपश्यंतिद्विजश्रेष्ठाएते नरकयातनाम् ॥ ११ ॥ मनसाचपरेषांयःकलत्राणिनसेवते ॥ सहलोकद्वयेनैवतेनावश्यंधराधृता ॥ १२ ॥

सदा क्षमा करनहारो और बहुत न बोलनहारो तथा असूया रहित मनुष्य ॥ ९ ॥ और सदा चतुराईकरि युक्त और सब प्राणीनके हितमें रत और पराये धर्मकी रक्षा करनहारो तथा पराये गुणनको प्रगट करन हारो ॥ १० ॥ और तृण मात्रहू पराये धनकी जो मनसोंहू जे चिंता नहीं करै हैं हे द्विजश्रेष्ठो वे नरककी यातनाको नहीं देखेहैं ॥ ११ ॥ जो मनसोहूँ पराई स्त्रीको

सेवन नहीं करैहैं वा करिकै दोनों लोक समेत पृथ्वी धारण कीगई ॥ १२ ॥ ताते धर्ममें रत पुरुषन करिकै पराई दाराके सेवनको त्याग करनो योग्यहै और जे पराई दारानसों गमन करै हैं वे नरकगामी होयहैं ॥ १३ ॥ जो देवताके समान माता पिताकी सेवा करै है वह वृद्धावस्थाके आवनेपै यमलोकको नहीं जायहै ॥ १४ ॥ याहीते शीलकी रक्षा करनेसों स्त्री धन्य हैं

तस्माद्धर्मरतैस्त्याज्यंपरदारोपसेवनम् ॥ यांतियेपरदारांस्तेनरानिरयगामिनः ॥ १३ ॥ मातरंपितरं यस्तुह्याराधयतिदेववत् ॥ संप्राप्तेवार्द्धकेकालेनसयातियमालयम् ॥ १४ ॥ अतश्चैवस्त्रियोधन्याःशीलस्य परिरक्षणात् ॥ शीलभंगेननारीणांयमलोकःसुदारुणः ॥ १५ ॥ तस्मिन्मार्गेसुखंयांतिगोप्रदानेनमानवाः ॥ गजाश्वरथदानेनयममार्गःसुखावहः ॥ १६ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्यानेषोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

और शीलके भंग होनेसे नारीनको अति दारुण यमको लोक मिलै है ॥ १५ ॥ गौके देनेसों मनुष्य वा मार्गमें सुखसों जाय है और हाथी घोडे तथा रथ देनेसे यमको मार्ग मनुष्यनको सुख देनेहारो होयहै ॥ १६ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डित केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां षोडशोऽध्यायः ॥ १६ ॥

नासिकेत बोले ॥ फिरिहू भयंकर यमके मार्गको कहोंगो वा महाघोर मार्गमें कहूँ २ अति विषम पर्वतहैं ॥ १ ॥ और वा मार्गमें कहूँ तौ वडी घोरकी लोहेकी कीलैंहैं और कहूँ असिपत्रनको वनहै और कहूँ पत्थर वर्षे हैं और कहूँ संतप्त वालुकाहै ॥२॥ और कहूँ हिमालयते सौगुनो अधिक बडो दारुण शीतहै और कहूँ बडो भयंकर अंधकारहै और कहूँ वडो दारुण घामहै ॥ ३ ॥ कहूँ मार्ग छुरा

नासिकेतउवाच ॥ ॥ पुनरेवप्रवक्ष्यामियममार्गंभयंकरम् ॥ तस्मिन्मार्गेमहाघोरेविषमाःपर्वताःक्कचित् ॥ १ ॥ कीलकाश्चक्कचिद्घोराअसिपत्रवनंक्कचित् ॥ क्कचिद्वर्षंतिपाषाणाःक्कचित्संतप्तवालुकाः ॥ २ ॥ हिमालयाच्छतगुणंक्कचिच्छीतंसुदारुणम् ॥ अंधकारंमहारौद्रंक्कचिद्घर्मःसुदारुणः ॥ ३ ॥ क्षुरधारामयंमार्गंक्कचिद्वैपूयशोणितम् ॥ तत्रवैतरणीनामनदीक्षुद्राभयंकरा ॥ ४ ॥ शतयोजनविस्तीर्णाकाकगृध्रैःसमन्विता ॥ तस्यांमज्जंतिपापिष्ठादुःखशोकसमन्विताः ॥ ५ ॥ गोप्रदानस्यकर्त्तारस्तेतरंतिद्विजोत्तमाः ॥ तीर्थस्नानरतैर्मर्त्यैःसासरित्सुतराभवेत् ॥ ६ ॥

कीसी धारहै और कहूँ पीव और लोहूहै वहाँ बडी भयानकक्षुद्र वैतरणी नाम नदीहै ॥ ४ ॥ वह सौ योजन अर्थात् चारसौ कोशकी चौडीहै और कौआ तथा गीधनकरिकै युक्तहै वह नदीमें दुःख तथा शोक सो युक्त पापी डुबैं हैं ॥ ५ ॥ और हे द्विजोत्तमो ! गौके दानके करनहारे मनुष्य वाके पार उतरि जायहैं और जे मनुष्य तीर्थनके स्नानमें रतरहै हैं उनको वह नदी सुखसों उतरने

योग्यहै ॥ ६ ॥ वाही मार्गमें जेधर्मिष्ठहैं वे सुखयुक्त रहे हैं हे द्विजोत्तमो ! सर्वत्र एकही व्यवहारहै ॥ ७ ॥ हे विप्रो ! एक समय धर्म राजकी सभाको सूर्यके समानहै तेज जिनको ऐसे नारदमुनि आवत भये ॥ ८ ॥ तव यम नारदमुनिको देखतेही हाथ

तस्मिन्नेवतुमार्गेयेधर्मिष्ठाः सुखसंयुताः ॥ एकएवास्तिसर्वत्रव्यवहारोद्विजोत्तमाः ॥ ७ ॥ एकस्मिन्समयेविप्राधर्मराजसभांप्रति ॥ सूर्यतेजःप्रतीकाशोह्यागतोनारदोमुनिः ॥ ८ ॥ यमस्तुनारदंदृष्ट्वाप्रत्युत्थायकृतांजलिः ॥ अर्घ्यपाद्यादिभिश्चैवनारदंप्रत्यपूजयत् ॥ ९ ॥ आसनेचोपविष्टस्तुनारदोदेवदर्शनः ॥ शोभतेस्ममहातेजास्तारापतिरिवांबरे ॥ १० ॥ ततोवैवस्वतोराजानारदंप्रत्युवाचह ॥ स्वागतंभोद्विजश्रेष्ठब्रह्मपुत्रमहामुने ॥ ११ ॥

जोरि उठिकै ठाढे होत भये और अर्घ्य पाद्यादि करिकै नारदमुनिको पूजत भये ॥ ९ ॥ और देवतानकोसो है दर्शन जिनको ऐसे नारदमुनि आसनपै बैठेभये ऐसे शोभायमान भये जैसे आकाशमें चंद्रमा शोभितहोयहै ॥ १० ॥ ता पीछे वैवस्वत राजा नारदमुनिसों बोलत भये कि, हे द्विजश्रेष्ठ ! आपको आवनो अच्छो भयो है ब्रह्माके पुत्र

आपको नमस्कार है ॥ ११ ॥ आज मेरो जन्म सफल भयो आज मेरो दिन सफल है। हे मुनि! आपके देखनेसे आज मेरो सब सफल भयो ॥ १२ ॥ आप यहाँ काहेके लिये आये हैं आवनेको कारण कहिये ॥ नारद बोले ॥ कि, मैं आपके दर्शनके लिये ब्रह्मलोकते यहाँ आयो हौं और धर्म तथा अधर्मके देखनेको आयो हौं ॥ १३ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डित

अद्यमेसफलंजन्ममममाद्यसफलंदिनम् ॥ अद्यमेसफलंसर्वंभवदालोकनान्मुने ॥ १२ ॥ किमर्थमिहचायातोब्रूह्यागमनकारणम् ॥ ॥ नारद उवाच ॥ भवतांदर्शनार्थायब्रह्मलोकादिहागतः ॥ धर्माधर्मस्यसर्वस्यनिर्णयंद्रष्टुमागतः ॥ १३ ॥ इतिश्रीनासिकेतोपाख्यानेसप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ छ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ तयोरेवंसंवदतोर्नारदस्ययमस्यच ॥ तत्रस्थानेचदिव्यानांविमानानांशतानिच ॥ १ ॥ भेरीमृदंगादिघोषैर्गीतवादित्रनिःस्वनैः ॥ घंटामर्द्दलवीणानांरवेणपणवस्यच ॥ २ ॥

केशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायां नासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायां सप्तदशोऽध्यायः ॥ १७ ॥ ॥ नासिकेत बोले ॥ नारद और यम ये दोनों ऐसे बातें कहरहे कि, वाही समय वहाँ सैकरान दिव्य विमान आये ॥ १ ॥ जिनमें भेरी मृदंग आदि शब्द हैं तिन करिकै

और घंटा ढोल तथा वीणानके शब्दनसों तथा पणवके शब्दसों शब्दायमानहैं ॥ २ ॥ ऐसे तेजके पुंजनसों युक्त हजारनही विमान आवत भये हे ब्राह्मणो! वाही तेजसों यम अंतर्धानको प्राप्त होते भये ॥ ३ ॥ और ब्रह्मपुत्र जे नारद मुनिहैं वेहू आश्चर्य में होगये और कुछ नहीं कहत भये और क्षणमेंही भयसे पीडित तथा भ्रष्टहै मन जाको ऐसो धर्मराज आवत भयो ॥ ४ ॥ नारद बोले ॥

आगतानिसहस्राणितेजःपुंजयुतानिच ॥ तेनवैमहसाविप्रायमोंतर्द्धानमागमत् ॥ ३ ॥ ब्रह्मपुत्रोविलक्षोभूदवदन्नैवकिंचन ॥ क्षणेनैवागतोधर्मोभयार्तोभ्रष्टमानसः ॥ ४ ॥ ॥ नारद उवाच ॥ ॥ सत्यंब्रूहि महाराजविष्णुतुल्यपराक्रम ॥ आसुराराक्षसाघोराःसर्वेतेवशसंस्थिताः ॥ कस्मात्त्वंभयसंत्रस्तोवायुवेगेननिर्गतः ॥ ५ ॥ धर्मराज उवाच ॥ ॥ अतिगुह्यांमुनिश्रेष्ठकथांपापप्रणाशिनीम् ॥ ब्रवीमिसकलांविद्वन्पुनर्धर्मविवर्धनीम् ॥ ६ ॥

कि, हे विष्णु तुल्य पराक्रम महाराज ! तुम सत्य कहौ कि, असुर और घोर राक्षस ये सब आपके वशमें हैं सो तुम काहे सों भयभीत होकै पवनकेसे वेगसों निकल गये ॥ ५ ॥ धर्मराज बोले ॥ हे मुनिश्रेष्ठ ! बहुतही गुप्त पापनकी नाशकरनहारी जो कथाहै ताहि

तुमसों कहौहौं हे विद्वन्! वह संपूर्ण धर्मकी बढ़ावनहारीहै ॥६॥ मृत्यु लोकमें बडो पंडित और सत्य व्रतमें परायण तथा प्रजानको पालन करनहारो जनकनाम विख्यात राजा होत भयो वह जितेन्द्रियहो और दानके देनेमें तत्परहो और क्रोध तथा मात्सर्यसों रहितहो ॥ ७ ॥ सत्यव्रता यह जाको सुंदर नामहै और सुंदर रूपवाली सब लक्षणसों संपन्न तथा सब धर्मनमें परायण

मृत्युलोके महाप्राज्ञःसत्यव्रतपरायणः ॥ जनकोनामविख्यातःप्रजानांपरिपालकः ॥ जितेंद्रियोदानपरः क्रोधमात्सर्यवर्जितः ॥ ७ ॥ तस्यपत्नीसुरूपासीन्नाम्नासत्यव्रताशुभा ॥ सर्वलक्षणसंपूर्णासर्वधर्मपरायणा ॥ ८ ॥ भर्तारंविष्णुबुद्ध्यायानित्यंशुश्रूषतेशुभा ॥ पतिव्रतापतिप्राणाभर्तृवाक्येसदारता ॥ सुखितेसुखितानित्यंदुःखितेदुःखिताचया ॥ ९ ॥ दक्षाचप्रियवाङ्नित्यमक्रोधाऽनृतवर्जिताः ॥ अतिथीन्पूजयेन्नित्यंसर्वसद्गुणशालिनी ॥ १० ॥

ऐसी वाकी रानीरही ॥ ८ ॥ जो विष्णुकी बुद्धिसों सदा पतिकी सेवा करती और पतिही है प्राण जाके ऐसी वह सदा भर्त्ताके वाक्यमें रत रहती और पतिके सुखी होनेपै नित्य सुखी रहती और वाके दुःखमें दुःखी रहती ॥ ९ ॥ चतुर ही और सदा प्यारी बात कहती और क्रोध कबहूं नहीं करती और कबहूँ झूठ नहीं बोले हैं और सब सुंदर गुणनकरिकै शोभित वह नित्य अतिथि

नको पूजन करती ॥ १० ॥ जनकराजाकी प्यारी भार्याजो धर्मके कार्यमें सदा रत रहै है वह श्रेष्ठ विमानमें बैठिकर ब्रह्मलोकको जाय है ॥ ११ ॥ इंद्र आदि सब देवतानके गण वाके सन्मुख आये हैं और हे विभो ! पितामहनेहू वाको प्रणाम कियो है ॥ १२ ॥ और जनक इंद्रालयमें प्रविष्ट भयो वह देवी वा पतिको लेके संपूर्ण देवतानके गण समेत ॥ १३ ॥ ब्रह्माके लोकमें गई. हे मुनीश्वर !

जनकस्यप्रियाभार्याधर्मकार्येसदारता ॥ सायातिब्रह्मणोलोकंविमानवरमास्थिता ॥ ११ ॥ शक्राद योदेवगणास्तस्याःसंमुखमागताः ॥ पितामहश्चतस्यावैप्रणतिंकृतवान्विभो ॥ १२ ॥ इंद्रालयस्यम ध्येषुप्रविष्टोजनकस्तथा ॥ तंगृहीत्वापतिंदेवीसर्वदेवगणैर्वृता ॥ १३ ॥ गतासाब्रह्मणोलोकंतस्याश्चते जसामुने ॥ लीनोहंभयभीतस्तुकारणंतेनिवेदितम् ॥ १४ ॥ ॥ नासिकेत उवाच ॥ ॥ इत्यादिसर्वमाख्या तंतत्रदृष्टंमुनीश्वराः ॥ संदेहोनात्रकर्तव्यःसर्वप्रत्यक्षदर्शनात् ॥ १५ ॥ ॥ वैशंपायन उवाच ॥ जनमेजयम हाराजपूर्वकल्पाश्रितांकथाम् ॥ शृणोतिश्रद्धयायुक्तःसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ १६ ॥

मैं वाके तेजसों भयभीत होके छिपि गयो यह करण मैंने आपसों निवेदन कियो ॥ १४ ॥ नासिकेत बोले ॥ हे मुनीश्वरो ! इत्यादि जो मैंने वहाँ देखोहो सो सब आप लोगनके आगे निवेदन कियो यामें संदेह न करनो चाहिये मैंने सब प्रत्यक्ष देखो है ॥ १५ ॥ वैशंपायन बोले ॥ हे जन्मेजय महाराज ! पूर्वकल्प भई या कथाको श्रद्धायुक्त होकै सुनै है वह सब पापनते छूटि जाय है ॥ १६ ॥

नासिकेत करि कहोभयो यह आख्यान परम पवित्र है ॥ १७ ॥ धन्य है स्वस्ति जो कल्याण है ताको अयन कहिये स्थान है और व्याधि जो रोग है ताको और दरिद्रको नाश करनहारो है याको सुनतो भयो मनुष्य जन्मरूपी जो संसारको बंधन है

नासिकेतेन कथितमाख्यानं पावनं महत् ॥ १७ ॥ धन्यं स्वस्त्ययनं चैवव्याधिदारिद्र्यनाशनम् ॥ शृण्वन्नरोविमुक्तः स्याज्जन्मसंसारबंधनात् ॥ १८ ॥ ॥ इति श्रीनासिकेतोपाख्याने धर्माधर्मनिर्णयोनाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥ ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥ ॥ श्रीकृष्णार्पणमस्तु ॥ ॥

तातें छूटि जाय है ॥ १८ ॥ इति श्रीमत्पण्डितपरमसुखतनयपण्डितकेशवप्रसादशर्म्मद्विवेदिकृतायांनासिकेतोपाख्यानभाषाटीकायांधर्माऽधर्मनिर्णयो नाम अष्टादशोऽध्यायः ॥ १८ ॥

वस्वब्ध्यङ्कनिशाकरैश्चगणिते वर्षेशुभेवैक्रमे माघेमास्यासितेदलेगुरुहथितौ श्रीसौम्यवारेशुभे ॥
टीकेयंसरला मनुष्यवचसा श्रीकेश वाख्यैर्द्विजैर्निर्मायिप्रथिताद्यवैश्यमणये श्रीक्षेमराजाय या ॥ १ ॥

इदं पुस्तकं मुम्बय्यां क्षेमराज श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) मुद्रणयन्त्रागारे मुद्रयित्वा प्रकाशितम् । संवत् १९६१, शके १८२६.

श्रीवेङ्कटेश्वरीय-क्रय्यपुस्तकोंकी संक्षिप्त-सूची।

नाम.	की. रु. आ.
पद्मपुराण सम्पूर्ण ५५००० ग्रन्थ बहुत पुस्तकोंके द्वारा शुद्ध होकर छपा तैयार है	१६–०
हरिवंशपुराण सटीक	५–०
हरिवंशपुराण भाषाटीका समेत	१०–०
हरिवंशपुराण केवल भाषावार्त्तिक जिल्दबँधा	५–०
श्रीवाल्मीकियरामायण संस्कृत मूल और अत्युत्तम भाषाटीकामाहात्म्य और अनुक्रमणिका सहित मोटा कागज सुन्दर अक्षर	२१–०
श्रीवाल्मीकीयरामायण केवलभाषा दो जिल्दोंमें	१०–०
श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण तनिश्लोकी रामानुनी भूषण संस्कृत टीकासहित	२०–०
श्रीवाल्मीकियरामायण रामाभिरामीटीका...	८–०
श्रीवाल्मीकियरामायण सुन्दरकांड मूल बडा	२–०
अध्यात्मरामायण सटीक चिकना कागज़	३–०
तथा रफ़ कागज	२–८
अध्यात्मरामायण भाषाटीका सहित	४–०
अध्यात्मरामायण मूल (गुटकारेशमी) पाठ करनेको अत्युत्तमहै	१–०
अध्यात्मरामायण–केवलभाषा सुन्दर जिल्दबँधी	२–०
श्रीमद्भागवत श्रीधरीटीका और टिप्पणीसह ग्लेज कागज	१०–०
तथा रफ़ू कागज....	९–०
भारतसार संस्कृत....	८–०
श्रीमद्भागवतसचूर्णिक मोटे अक्षर उत्तम कागजकी (सप्ताहबाँचनेमेंपरमोपयोगी)	८–०
श्रीमद्भागवत भाषाटीका माहात्म्य और शंका समाधान सह अत्युत्तम जिसमें कथाके सिवाय ५०० दृष्टांतहैं (नईछपी)	१२–०
श्रीमद्भागवत–सुबोधिनीटीकासमेत पढनेवालों व सप्ताह बाँचनेवालोंको परमोपयोगीहै	१२–०

(संपूर्ण पुस्तकोंका "बडासूचीपत्र" अलगहै मँगालीजिये) पुस्तक मिलनेका ठिकाना–**खेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर"** स्टीम् प्रेस **बम्बई.**

अत्रेयमभ्यर्थना.

अस्माकं मुद्रणालये वेद-वेदान्त-धर्मशास्त्र-प्रयोग-योग-सांख्य-ज्योतिष-पुराणेतिहास-वैद्यक-मंत्र-स्तोत्र-कोश-काव्य-चम्पू-नाटकालंकार-संगीत-नीति-कथाग्रंथाः, बहवः स्त्रीणां चोपयुक्ता ग्रंथाः, बृहज्ज्योतिषार्णवनामा बहुविधचित्रचित्रितोऽपूर्वग्रन्थः संस्कृतभाषया, हिन्दीमारवाडयन्यतरभाषाग्रन्थास्तत्तच्छास्त्रविषयानुवादकाः, चित्राणि, पुस्तकमुद्रणोपयोगिन्यो यावत्यस्सामग्र्यः, स्वस्वलौकिकव्यवहारोपयोगिविचित्रचित्रितालिखितपत्रवत्पुस्तकानिच; मुद्रयित्वा प्रकाशन्ते सुलभेन मूल्येन विक्रयाय । येषां यत्राभिरुचिस्तत्तत्पुस्तकाद्युपलब्धये एवं नव्यतया स्वस्वपुस्तकानि मुमुद्रयिषुभिः सुलभयोग्यमौल्येन सीसकाक्षरैः स्वच्छोत्तमोत्तमपत्रेषु मुद्रिततत्पुस्तकानां स्वस्वसमयानुसारेणोपलब्धये च पत्रिकाद्वारावैः प्रेषणीयोऽस्मि ।

अधिकमस्मदीयसूचीपुस्तकानां भिन्नभिन्नविषयाणां प्रापणेन "श्रीवेङ्कटेश्वरसमाचार" पत्रिकाप्रापणद्वारा च ज्ञेयमिति शम् ।

क्षेमराज श्रीकृष्णदास, "श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः खेतवाड़ी–मुंबई.

इति नासिकेतोपाख्यानं भाषाटीकासहितं सम्पूर्णम् ।